Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय विश्व युद्ध

हिटलर की कहानी

गुरुदत्त

43
D
4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

168024

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय विश्वयुद्ध (हिटलर की कहानी)

द्वितीय विश्वयुद्ध (Second World War) वास्तव में हिटलर की ही कहानी है। इस अभिमानी व्यक्ति ने इतनी शक्ति संचित कर ली थी कि वह विश्वविजय का दुःस्वप्न देखने लगा था। प्रत्येक अभिमानी व्यक्ति की भांति इसका भी अंत बुरा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर माला के अन्य पुष्प

महर्षि दयानन्द

जगत की रचना
(भारतीय दृष्टिकोण से)

द्वितीय विश्व युद्ध
(हिटलर की कहानी)

बोध कथाएँ

इस माला के अन्तर्गत किशोरों के लिए न केवल रोचक और आकर्षक पुस्तकें प्रकाशित करना प्रत्युत प्रेरणाप्रद एवं उपयोगी साहित्य प्रस्तुत करना यही हमारा उद्देश्य है।

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

द्वितीय विश्वयुद्ध

081
168024

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

Central Library
168024
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-D

© हिन्दी साहित्य सदन

मूल्य 30.00

प्रकाशक **हिन्दी साहित्य सदन**
2 बी. डी. चैम्बर्स , 10/54 देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग , नई दिल्ली -110005

Email: hindisahityasadan@gmail.com

फोन 23553624, 23551344, 09213527666

संस्करण 2013

मुद्रक अजय प्रिंटर्स , दिल्ली-51

पुस्तक द्वितीय विश्व युद्ध — हिटलर की कहानी

लेखक गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

: १ :

द्वितीय विश्व युद्ध की कहानी वास्तव में एडोल्फ हिटलर की कहानी ही कहनी चाहिये। एडोल्फ हिटलर की मानसिक अवस्था की जन्मदाता जर्मन जाति की मानसिक अवस्था है।

इस मानसिक अवस्था के निर्माता जर्मनी के तीन महापुरुष कहे जाते हैं। एक फ्रैडरिक महान् के नाम से विख्यात है। यह जर्मनी के एक स्वतन्त्र प्रान्त प्रशिया का शासक था। वह अपनी योग्यता से सम्पूर्ण जर्मनी का मुकुटधारी राजा बन गया था। इसकी ताजपोशी को १७०१ में स्वीकार कर लिया गया। यह उस परिवार का पूर्वज था, जिसमें कैसर राजा पैदा हुए। इन कैसरों के राज्य में सारा जर्मनी संगठित हुआ और यह बहुत ही अल्प-काल में उद्योग-धन्धों में भूमण्डल का नेता बन गया।

जर्मनी का दूसरा निर्माता औटो फौन बिस्मार्क था। यह प्रशिया प्रान्त का रहने वाला एक ज़मीदार (Junker) था। यह अपनी राजनीतिक प्रतिभा और रक्त तथा तलवार की मीमांसा से जर्मनी को एकराज्य बनाने में सफल हुआ। यह उसने सन् १८६६-७७ के भीतर कर दिखाया।

इसने जर्मनी के पुरातन शत्रु फ्रांस को युद्ध में हराया।

बिस्मार्क ने पोलैंड को भी पराजित कर इसके बहुत से भू-भाग को जर्मनी में मिला लिया। एक बात इसनें और की। इससे पूर्व, जर्मनी लगभग ३०० छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्यों में बँटा हुआ था। जर्मनी की राजनीति में आस्ट्रिया तथा हंगरी के सम्राट का हस्तक्षेप चलता था। बिस्मार्क ने आस्ट्रिया हंगरी को भी पराजित कर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके सम्राट को केवल एक मित्र की पदवी पर ला बैठाया।

जर्मनी का तीसरा निर्माता हिटलर बना। यह भी पूर्व के दो जर्मन महापुरुषों की भाँति सैनिक-शक्ति और रक्त बहाने में विश्वास रखता था।

इस प्रकार जर्मनी तैयार किया गया, जिससे प्रथम जर्मन-युद्ध हुआ और फिर द्वितीय जर्मन-युद्ध हुआ।

इन दोनों युद्धों में जर्मनी की पराजय हुई। अन्तर यह रहा कि प्रथम जर्मन-युद्ध में अमरीका की भूल से जर्मनी के साथ सन्धि उसकी पूर्ण पराजय से पहले ही कर ली गई थी। जर्मन सेना सन्धि से असन्तुष्ट, परन्तु सब प्रकार से पूर्ण शक्ति सहित जर्मनी वापस लौट गई।

फ्रांस और इंग्लैंड तो प्रथम जर्मन-युद्ध से तबाह हो गये थे। परन्तु जर्मनी की वास्तविक शक्ति क्षीण नहीं हुई थी। सबसे बड़ी बात यह हुई कि जर्मनी के प्रथम युद्ध ने एडोल्फ हिटलर को नेता बन जर्मनी में कैसर की भाँति तानाशाह बनने की प्रेरणा दी।

जर्मनी के प्रथम युद्ध में युद्ध-विराम सन्धि के समय हिटलर एक सैनिक था। वह घायल हो एक हस्पताल में पड़ा हुआ था, जब सन्धि का समाचार प्रसारित हुआ। इससे उसे बहुत दुःख अनुभव हुआ। उसको यह समझ आया कि जर्मनी पराजित नहीं हुआ। इसके अधिकारियों ने ही छलना खेलकर इसे पराजित कराया है। उसके मन में यह उत्कंठा बन गई थी कि इन देश-द्रोहियों से जर्मनी को मुक्त करना प्रथम कार्य है।

: २ :

हिटलर का जन्म १८८९ में हुआ था। इसका पिता आस्ट्रिया सरकार का एक साधारण चुंगी का क्लर्क था। यह कहा जाता है कि उस काल में भी हिटलर अधिकतर स्वप्नलोक में ही रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर का प्रारम्भिक जीवन एक निर्धनता का जीवन था। वह एक बहुत ही साधारण दर्जे का चित्रकार था और उसके बनाये हुए चित्र बहुत ही मामूली मूल्य पर दुकानदार लोग खरीद कर मेज़ों और कमरों को सजाते थे।

अपने जीवन से असन्तुष्ट, वह सन् १९१३ में जर्मनी के प्रान्त बवेरिया में चला आया। प्रथम जर्मन युद्ध के आरम्भ होने पर वह सेना में भरती हो गया। सेना में हिटलर का जीवन कुछ अधिक सुखमय था। यह काम उसके मन-पसन्द का था। यों भी वह, आस्ट्रिया का नागरिक होने पर भी, स्वभाव और विचार से स्वयं को जर्मन मानता था। उसके मन में जर्मन जातीय अभिमान की मात्रा बहुत से जर्मनों से भी अधिक थी।

१९१८ में अंग्रेज़ सेना ने जर्मन सेना पर मस्टर्ड गैस से यैप्रस पर आक्रमण किया था। इस गैस से हिटलर अस्थायी रूप में दृष्टिविहीन हो गया और उसे पासवान के हस्पताल में भेज दिया गया। इस समय वार्सेल्ज़ में युद्ध-विराम सन्धि हो गई। इस सन्धि के समाचार से हिटलर के दिल को बहुत धक्का लगा। वह समझता था कि वास्तविक रूप में जर्मनी पराजित नहीं हुआ। कुछ स्वार्थी अधिकारियों ने षड्यन्त्र करके जर्मनी की पराजय कराई है। इन षड्यन्त्रकारियों में वह यहूदियों को मुख्य समझता था।

युद्ध से वापस म्युनिख में पहुँच वह जर्मनी के राज्याधिकारियों के विरुद्ध आन्दोलन करने लगा। वह उनको देशद्रोही मानता था। उस समय बर्लिन में जनतन्त्र राज्य स्थापित हो चुका था। इस जनतन्त्र राज्य ने वार्सेल्ज़ की सन्धि स्वीकार कर ली थी। वार्सेल्ज़ की सन्धि जर्मनी के लिये अति कठोर थी। इससे हिटलर को बर्लिन के जनतन्त्र राज्य के विरुद्ध प्रचार करने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिटलर मंच पर चढ़ आया और छत की ओर पिस्तौल चला कर सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर बोला—राष्ट्रीय क्रान्ति आरम्भ हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाना मिल गया।

१९१९ में म्युनिख की बीयर शराब के गोदाम में वह मज़दूरों की एक सभा में गया। वहाँ उसने वही बातें होती सुनीं जो वह अपने मन में विचार किया करता था। अतः वह इस दल में सम्मिलित हो गया।

इस दल की एक सभा में, जो फरवरी १९२० को म्युनिख में हुई थी, हिटलर ने प्रथम बार जनता में भाषण दिया और जहाँ उसके दल वालों को उसकी बोलने की योग्यता पर अचम्भा हुआ, वहाँ हिटलर को स्वयं भी अपनी इस योग्यता पर विस्मय हुआ। इसके उपरान्त उसके मन में एक नेता, एक तानाशाह बनने की लालसा जाग पड़ी। वह एक राजनीतिक कार्यकर्त्ता बन गया।

हिटलर स्वभाव से एक सैनिक था। वह बहुत अच्छा व्याख्यान-दाता था। वह सैनिक-दृष्टि से संगठन करने की योग्यता रखता था। उसके चारों ओर विनियोजित सैनिक (disbanded soldiers) एकत्रित हो गये और सन् १९२३ नवम्बर में बवेरिया में सैनिक-क्रान्ति उत्पन्न करने पर उतारू हो गये। हिटलर के साथियों में हैस्स, गोयरिंग, रोज़नबर्ग, रोहम इत्यादि नेता थे। इनके साथ जनरल लुडिण्डौर्फ भी था। ये सब अपने दो सहस्र के लगभग साथियों के साथ एक राज्य-समारोह में जा धमके। वह समारोह बीयर हाल में हो रहा था। जब लोग जगों में बीयर लिये पी रहे थे, हिटलर मंच पर चढ़ आया और छत की ओर पिस्तौल चला कर सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर बोला, "राष्ट्रीय क्रान्ति आरम्भ हो रही है।"

इस उत्सव में बवेरिया के तीन उच्चाधिकारी काहर, लोसौ और सीसर उपस्थित थे। इन तीनों को हिटलर पिस्तौल दिखा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले कमरे में ले गया। इनको धमका-डरा कर इनसे त्याग-पत्र पर उसने हस्ताक्षर करा लिये। हिटलर ने इस समारोह में घोषणा कर दी, "आज से पाँच वर्ष पूर्व जब मैं गैस से अन्धा हो रहा था, मैंने यह प्रण किया था कि नवम्बर की सन्धि करने वाले अपराधियों को पदच्युत कर उनको दण्ड दिये बिना शान्ति से नहीं बैठूंगा। वह प्रण पूरा करने के लिये मैंने आज यह सब कृत्य किये हैं।"

बीयर हाल में तो हिटलर की विजय हो गई, परन्तु पुलिस और सेना उसकी ओर नहीं हुई। अगले दिन जब हिटलर, गोयरिंग, हैस्स इत्यादि लोग अपनें लगभग तीन सहस्र साथियों के साथ म्युनिसिपल हाल की ओर जाने लगे तो लगभग एक सौ पुलिस बन्दूकचियों ने उनका मार्ग रोक लिया। हिटलर के साथियों ने पुलिस वालों को बरगलाने का यत्न किया, परन्तु पुलिस टस-से-मस नहीं हुई। हिटलर ने उनको डराने के लिये अपना पिस्तौल चलाया तो पुलिस ने भी गोली चलाई। पुलिस के गोली चलाने पर उपद्रवी भाग खड़े हुए। हिटलर ने भूमि पर लेटकर जान बचाई। गोयरिंग घायल हो गया। हैस्स भाग गया। हिटलर को कठिनाई से वहाँ से दूर ले जाया गया। विद्रोहियों में केवल जैनरल लुडिण्डौर्फ अपने स्थान पर खड़ा रहा। वह डरा नहीं और अकेला ही पुलिस की ओर बढ़ता गया। वह सैनिक-वर्दी पहने हुए था। इस कारण पुलिस ने उसको निकल जाने के लिये रास्ता दे दिया। लुडिण्डौर्फ ने जब स्वयं को अकेला देखा और अपने अन्य साथियों को पहले ही मोर्चे से भागते देखा तो सीधा अपने घर जाकर आराम करने लगा। हिटलर बाद में पकड़ लिया गया। गोयरिंग भाग कर स्वीडन चला गया। हैस्स भी आस्ट्रिया को भाग गया था, परन्तु बाद में पकड़ लिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह असफल क्रान्ति 'बीयर-हाल पुश' के नाम से विख्यात है। इससे हिटलर पर मुकदमा हुआ और उसमें इसने साहसपूर्ण बयान देते हुए कह दिया, "मैं वर्तमान शासन को बदलना चाहता हूँ।" इससे हिटलर की ख्याति बढ़ गई। इस मुकदमे में उसको चार वर्ष का दण्ड मिला। परन्तु अठारह मास की कैद के उपरान्त उसको कुछ शर्तों पर छोड़ दिया गया।

: ३ :

हिटलर की विचारधारा उसकी अपनी एक पुस्तक 'मीन काफ' में भली-भाँति वर्णन की गई है। मीन काफ एक जर्मन भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है 'मेरा संघर्ष।' इस पुस्तक में हिटलर ने अपने विचार अति विस्तार से वर्णन किये हैं। यहाँ उन सबका संक्षेप में वर्णन भी सम्भव नहीं। हम केवल कुछ सिद्धान्तों का ही उल्लेख करेंगे।

मीन काफ की बात बहुत ही सरल परन्तु भयंकर है। उसमें लिखा है, "मनुष्य एक लड़ाकू प्राणी है और जाति मनुष्यों का एक समूह होने से एक लड़ाकुओं का गुट मानना चाहिये। जैसे, जब कोई प्राणी संघर्ष करना छोड़ दे तो वह मर जाता है, वैसी ही अवस्था जातियों की होती है।

"जाति जन्म से होती है। किसी जाति में उसकी संघर्ष-शक्ति उसकी शुद्धता पर निर्भर करती है। शुद्धता से अभिप्राय रक्त की शुद्धता है।

"जर्मन जाति आर्य जाति ही है। सृष्टि के आदि काल से सब प्रकार का ज्ञान, विज्ञान, कौशल और शौर्य आर्य जाति ने ही निर्माण किया है। आर्य जाति का ह्रास इसमें घटिया रक्त मिश्रण से हुआ है।

"जर्मन जाति को अपनी शुद्धता स्थिर रखने के लिये अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को यहूदियों से बचाना चाहिये। यहूदी आर्य जाति से नहीं हैं।

"शान्तिप्रियता (pacifism) और अन्तर्राष्ट्रीयता (internationalism) जर्मन जाति के लिये घातक हैं। इससे जाति को यहूदियों और कम्युनिस्टों से बचना चाहिये। ये दोनों अन्तर्राष्ट्रीय (internationalist) संगठन हैं।

"शान्तिप्रियता एक घातक पाप है। अन्तर्राष्ट्रीयता मूर्खता है। अतः जाति के घटकों का राष्ट्रीयकरण होना चाहिये। अर्थात् जाति के सब व्यक्तियों को संस्कारों और निष्ठा से राष्ट्रीय होना चाहिये। इस विषय में बुद्धि का प्रयोग गौण है। निष्ठा और निश्चय ही मुख्य बातें हैं।

"व्यक्ति जो राज्य करने की योग्यता रखते हैं, वे जन्म लेते हैं, बनाये नहीं जा सकते। साधारण जनता को उनकी आज्ञा माननी चाहिये। ये नेता कहाते हैं। ये लोग बहुत महत्ता रखते हैं।

"किसी जाति के जीवन की गारन्टी उसमें पाशविक शक्ति से निश्चय होती है। जातियों को लड़ना सीखना चाहिये। जो जातियाँ लड़ना भूल जाती हैं, वे नाश को प्राप्त होती हैं। इसी कारण सेना की महत्ता सर्वाधिक है।

"जर्मन लोग तो प्राचीन आर्य जाति के उत्तराधिकारी हैं। वे यदि समय पर संगठित होते तो अब तक भूमण्डल पर राज्य स्थापित कर चुके होते।

"जर्मनों को पुनः भूमण्डल का राज्य प्राप्त करना चाहिये। उसके लिये, इसकी सेना को और इसके घटकों को यह समझ लेना चाहिये कि वे अजेय हैं।

"किसी जाति की विदेश-नीति निर्लज्ज होनी चाहिये। राजनीतिज्ञों का यह कर्तव्य नहीं है कि वे पराजय को शौर्य का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें। जाति की समृद्धता और अजेयता ही विदेश-नीति की सफलता है।

"शान्तिप्रियता कायरता का दूसरा नाम है। कायरों के साथ कोई मित्रता एवं सन्धि नहीं करता।

"'लीग ऑफ नेशन्ज़' के सामने हाथ पसारने से अथवा भगवान का आशीर्वाद माँगने से कुछ नहीं मिलेगा। बलशाली का सब मान करते हैं।"

हिटलर की पुस्तक मीन काफ में ये कुछ बातें थीं, जो महान् होते हुए भी मूर्खतापूर्ण थीं। जैसा कि हम जानते हैं ये आर्य जाति के सिद्धान्त नहीं हैं। आर्य जाति में सर्वोपरि ब्राह्मणों (विद्वानों) को माना है, क्षत्रियों को नहीं। कर्म को प्रधान माना है, परन्तु ज्ञानयुक्त कर्म को।

हिटलर के इन सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा जर्मनों ने की।

ये सिद्धान्त मिथ्या थे और इनके कारण ही जर्मन जाति की यह दुर्दशा हुई जो द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् देखी गयी।

: ४ :

१९२३ 'बीयर-हाल पुश' से हिटलर को अपनी नीति में दोष समझ आ गया। उसने अपने दल की एक प्राइवेट सेना बनाई हुई थी। उसका नाम 'स्टौर्म ट्रुपर' था। यह सेना राष्ट्रीय सेना से लड़ने के लिये तैयार की गयी थी। हिटलर समझ गया कि यह कभी भी सम्भव नहीं। इस कारण गृह-युद्ध की तैयारी के स्थान इसने 'रीख' में अपने दल का बहुमत बनाने के लिये इस दल का प्रयोग आरम्भ कर दिया। इसकी सहायता से अपने दल की सभाओं की रक्षा करने, दूसरे दल की सभाओं को भंग करनें, मतदाताओं से मत लेने और उद्योगपतियों से धन प्राप्त करने का प्रबन्ध होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९२८ के निर्वाचनों में हिटलर के दल को ४९१ स्थानों में केवल १२ स्थान मिले। १९३० में १०७ स्थान मिले और १९३२ में २३० स्थान प्राप्त हो गये। इस उन्नति में स्टौर्म ट्रूपर का मुख्य हाथ था। बहुमत तो इस समय भी नहीं था। हाँ, कई दलों में यह सबसे बड़ा दल था।

इस समय जर्मनी का प्रधान फील्ड मार्शल हिण्डनबर्ग था। किसी ने सुझाव दिया कि सबसे बड़े दल के नेता हिटलर को रीख का चान्सलर (प्रधान मन्त्री) बना लिया जाय।

हिण्डनबर्ग ने अभिमान में कहा, "चांसलर तो नहीं, हाँ इसको डाकघर में मेरे नाम की मुहरें लगाने के लिये चपरासी रखा जा सकता है।"

भाग्य की विडम्बना ! प्रधान (हिण्डनबर्ग) का कार्य-काल समाप्त हुआ तो हिटलर इस पद के लिये प्रत्याशी बन गया। हिटलर का मुकाबला करने के लिये उससे बढ़ कर ख्याति-प्राप्त कोई था नहीं। विवश उसके विरोध में हिण्डनबर्ग को स्वयं खड़ा होना पड़ा। उस समय के जर्मनी के संविधान के अनुसार प्रधान बनने के लिये आधे से अधिक मत प्राप्त करने आवश्यक थे। हिण्डनबर्ग को इतने मत प्राप्त करने के लिये दो बार निर्वाचन लड़ना पड़ा। पहली बार हिण्डनबर्ग को ४९.६ प्रतिशत मत मिले और हिटलर को ३०.१ प्रतिशत। दूसरी बार हिण्डनबर्ग को ५३.० प्रतिशत और हिटलर को ३६.८ प्रतिशत मिले। टक्कर ज़बरदस्त थी। इस पर भी हिटलर प्रधान नहीं बन सका। चान्सलर (प्रधान मन्त्री) वह बन नहीं सकता था। 'रीख' में उसका बहुमत नहीं था। अतः जोड़-तोड़ होने लगे।

हिटलर चान्सलर तो बना परन्तु सेना के राष्ट्रीय दल के सहयोग से। चांसलर बनकर उसने कम्युनिस्टों को दबाना आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया ।

२७ फरवरी, १९३३ को रीख की इमारत को आग लग गयी । अब यह सिद्ध हो चुका है कि रीख को आग नाज़ी दल ने लगाई थी, परन्तु उस समय इसका दोष कम्युनिस्टों पर लगाया गया और उस दल को अवैध घोषित कर सब कम्युनिस्टों को पकड़ लिया गया ।

इस समय बर्लिन की सड़कों पर खुले आम कम्युनिस्टों से झगड़े होते थे । सरकार नाज़ी दल की सहायक थी । रीख को आग लगने के पहले एक मास में ४६१ ऐसी घटनाएँ हुई थीं ।

रीख की इमारत को आग लगने के उपरान्त हिटलर ने कम्युनिस्ट दल को अवैध घोषित किया और संकट-स्थिति की घोषणा कराकर स्वयं पूर्णाधिकार सम्पन्न आपत्-कालीन तानाशाह बन गया ।

यह प्रस्ताव रीख में ९४ मतों के मुकाबले में ४४१ मतों से पारित हो गया ।

इसके उपरान्त तो हिटलर ने उन सदस्यों और दलों को भी अँगूठा दिखा दिया, जिनके बल से उक्त प्रस्ताव पारित हुआ था ।

प्रथम युद्ध में जर्मनी की पराजय हुई थी । जर्मनी में प्रजातंत्र स्थापित हुआ था । वह प्रजातंत्र सफल नहीं हो सका । १९३३ में पुनः उसी विचार के लोग राज्यारूढ़ हो गये, जिनको पराजित करने के लिये वह युद्ध लड़ा गया था ।

हिटलर ने अपनी पुस्तक में लिखा है—'जर्मन लोग ईश्वर के प्रिय पुत्र हैं । आज से छः सौ वर्ष पूर्व हम स्लाव जाति को धकेलते हुए फैल रहे थे । परन्तु घर की फूट के कारण और यहूदियों के विरोध के कारण यह कार्य रुक गया । अब हम को पुनः वही कार्य करना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हमारी विदेश नीति की सफलता का मापदंड यह होगा कि सौ वर्ष में जर्मन जाति आठ करोड़ से पचीस करोड़ हो जायेगी। साथ ही इतने जर्मनों के रहने को स्थान प्राप्त होगा।'

हिटलर ने पूर्ण अधिकार सम्पन्न होते ही, ऐसे कानून बनाने आरम्भ किये कि जिनसे कम्युनिस्टों को जर्मनी में निःशेष कर दिया गया। इसके साथ ही यहूदियों का जर्मनी में बीज नाश करने का प्रयास आरम्भ हो गया। इस काम में हिटलर का सबसे बड़ा सहायक डाक्टर गोयबल था। यह महा धूर्त, चरित्रहीन एवं अति क्रूर व्यक्ति था।

: ५ :

जब से हिटलर ने जर्मनी का राज्य-भार सम्हाला, उसने जर्मनी को एक सुदृढ़ सैनिक-शक्ति-सम्पन्न बनाना आरम्भ कर दिया।

उसने वारसेल्ज़ की संधि का विरोध छुपे-छुपे आरम्भ कर दिया। इस सन्धि के अनुसार जर्मनी को एक सीमा से अधिक शस्त्रास्त्र रखने की स्वीकृति नहीं थी।

१९३४ में जर्मनी ने 'लीग ऑफ नेशंज़' को छोड़ दिया। हिटलर सैनिक तैयारी न कर सकता, यदि मित्र राष्ट्र, जिन्होंने जर्मनी को पराजित किया था, अदूरदर्शी और मूर्ख नहीं होते। सृष्टि का यह नियम है कि भले और दुष्ट इस भूमण्डल में सदा से रहे हैं और रहेंगे। दुष्टों को नियंत्रण में रखने के लिये भले लोगों को अपना संगठन सदा दुष्टों के संगठन से सुदृढ़ रखना चाहिये। इंग्लैंड और फ्रांस ने यह नहीं किया। वे कर तो सकते थे, परन्तु उन्होंने जान-बूझ कर अपने को दुर्बल रखा। इससे हिटलर दिन के बाद दिन इनको आँखें दिखाता चला गया।

रूस तो जर्मनी से १९१८ में ही पराजित हो गया था। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी ने रूस से युद्ध का हर्जाना ६,००,००,००,००,००० (छः खरब) मार्क्स ले लिया था। इधर जर्मनी की पराजय फ्रांस, अमरीका और इंग्लैण्ड से हुई, तो इन्होंने हर्जाना माँगा। यह हर्जाना वे ले नहीं सके। जर्मनी ने तो रूस से हर्जाना ले लिया था। इसके साथ २,००० रूसी कारखाने भी छीन लिये और रूस का इतना बड़ा भूभाग ले लिया, जिसमें रूस की एक-तिहाई जन-संख्या रहती थी। मित्रराष्ट्र जर्मनी से ऐसा कुछ कर नहीं सके। वे करना चाहते नहीं थे। उनमें हीन भावना थी। यही द्वितीय युद्ध का मूल कारण हुआ।

हर्जाना न मिलने पर जब फ्रांस ने सन्धि के नियमों के अनुसार रूढ़ प्रान्त अपने अधीन किया तो इंग्लैण्ड और अमरीका उसकी निन्दा करने लगे। जब १९३६ में हिटलर ने रूढ़ को पुनः अपने अधिकार में, सन्धि की अवहेलना करके, ले लिया तो इंग्लैण्ड ने प्रसन्नता प्रकट की थी।

इंग्लैण्ड चाहता था कि जर्मनी को यह विश्वास हो जाये कि वह युद्ध नहीं चाहता। इस कारण १९३१ तक इंग्लैण्ड ने अपने बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ तोड़-फोड़ डाले थे, तोपें बेकार कर दी थीं, सेना बहुत कम कर दी थी। १९३२ में जब जर्मनी ने यह माँग की कि वारसेल्ज़ की सन्धि द्वारा लगायी शस्त्रास्त्र पर रोक हटा ली जाये, तो इंग्लैंड ने इसका समर्थन किया था।

जब १९३३ में हिटलर चांसलर बना तो इंग्लैण्ड ने एक प्रस्ताव रख दिया। यह प्रस्ताव 'मैकडॉनल्ड प्लान' के नाम से विख्यात है। इसके अनुसार फ्रांस को अपनी सेना पाँच लाख से कम कर दो लाख कर लेनी थी। साथ ही छः इंच से बड़े मुख वाली तोपें तोड़ देनी थीं और नई तोपें साढ़े चार इंच से बड़ी

—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बनानी थीं। हवाई शक्ति को भी कम करने का प्रस्ताव था।

मित्र राष्ट्रों की इस मूर्खता का हिटलर ने पूर्ण लाभ उठाया। वह स्वयं लीग ग्राफ नेशन्ज़ से पृथक् हो जोर-शोर से सैनिक तैयारी करने लगा।

जहाँ हिटलर ने अपनी सैनिक तैयारी आरम्भ की, वहाँ घर के विरोधियों से भी उसने अपनी रक्षा की। जर्मनी में हिटलर के शत्रु दो थे। एक कम्युनिस्ट और दूसरे यहूदी।

यों तो कम्युनिस्ट सर्वथा निःशेष हो चुके थे, परन्तु हिटलर के अपने साथियों में कुछ थे जो कम्युनिस्टों से प्रेम रखते थे। उनका नेता रोइम (Roehm) था। वह हिटलर का १९२२ से साथी था। नाज़ी दल के स्टौर्म ट्रुपर्स का यह नेता था। वह अपनें को समाजवादी बताता था। हिटलर उसको कम्युनिस्ट समर्थक मानता था।

३० जून १९३४ को कुछ सैनिकों की सहायता से हिटलर ने स्वयं रोइम को जा पकड़ा और उसे गोली से उड़ा दिया। पीछे उसके साथियों को चुन-चुन कर मरवा डाला। यह अनुमान लगाया जाता है कि इस दल के भीतरी संघर्ष में लगभग एक सहस्र लोग मारे गये।

घर के दूसरे शत्रु यहूदी माने जाते थे। इनको निःशेष करने के लिये डाक्टर गोयबल को नियुक्त किया गया। डा० गोयबल ने इनके विपरीत कार्यारम्भ किया। ज्यूं-ज्यूं हिटलर शक्तिमान् होता गया, यहूदियों के साथ अधिक और अधिक क्रूरता का व्यवहार किया जाने लगा।

युद्ध के उपरान्त जाँच करने पर यह पता चला है कि हिटलर के राज्य काल में २,००,००,००० (दो करोड़) से अधिक यहूदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष मारे गये थे ।

हिटलर ने सेना से अपने फादरलैण्ड जर्मनी के प्रति निष्ठा और भक्ति के स्थान अपने प्रति निष्ठा और भक्ति की सौगन्ध दिलवानी आरम्भ कर दी । सौगन्ध इस प्रकार थी—'मैं परमात्मा को साक्षी मान कर यह सत्य शपथ लेता हूँ कि मैं बिना शर्त के हिटलर की आज्ञा का पालन करूँगा, जो जर्मन रीख और जर्मन लोगों का फ्यूहरर (नेता) है और जो सेनाओं का परम अध्यक्ष है । इस शपथ के अधीन एक बहादुर सैनिक की भाँति अपना जीवन भी भय में डाल दूँगा ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

युद्ध आरम्भ

हिटलर ने अपनी पुस्तक में यह पहले ही लिख दिया था कि जो जाति लड़ना छोड़ देती है, वह मर जाती है।

इस पर भी मित्र राष्ट्रों के कुछ मूर्ख राजनीतिज्ञ यह समझते रहे कि जर्मनी के साथ भलमनसाहत का व्यवहार रखकर शान्ति स्थापित की जा सकती है। इनमें ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री सर नेवल चैम्बरलेन एक थे। लायड जार्ज और वाल्डविन दूसरे थे। ब्रिटेन के कुछ समाचार-पत्र भी इसी श्रेणी में सुगमता से रखे जा सकते हैं।

जिस समय हिटलर सैनिक तैयारी में सिर तोड़ यत्न कर रहा था, ब्रिटेन के ये नीति विहीन नेता शान्ति-शान्ति और हथियार कम करने की घोषणाएँ कर रहे थे। जब हिटलर ने सार और लौरेन के क्षेत्रों पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया तो लन्दन के समाचार-पत्रों में हिटलर को देवता घोषित किया जाने लगा था। हिटलर ने सुडेटनलैंड पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया तो ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री सर नेवल चैम्बरलेन हिटलर से मिलकर मीठी-मीठी बातें कर सन्तुष्ट होकर आये थे।

जब चैम्बरलेन ने लन्दन पहुँच कर यह घोषणा की कि इंग्लैंड को हिटलर से किसी प्रकार का भय नहीं, उस समय लाखों की संख्या में अंग्रेज़ों ने गिरजाघरों में शान्ति के घण्टे बजाये और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
168324 Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
R-089.
R.089.914
GUR-D

प्रार्थनायें कीं।

इस सब अवधि में हिटलर अपनी 'मीन काफ' में लिखे के अनुसार कार्य कर रहा था। हिटलर ने आह्वान किया कि मध्य योरुप के सब देशों के जर्मन जाति में उत्पन्न लोग, जर्मनी के झंडे तले संगठित हो जावें और फिर जर्मन साम्राज्य पूर्व की ओर फैलाया जाय। उद्देश्य यह है कि पूर्ण भूमण्डल पर जर्मन जाति का राज्य हो जाय।

इस दिशा में सर्व प्रथम कार्य राइनलैण्ड पर अधिकार करना था। लोकारनो की सन्धि के अनुसार जर्मनी का वह क्षेत्र जो राइन नदी के बाँयी ओर था, फ्रांस की सेना के अधिकार में हो गया था। यह अधिकार कुछ वर्षों के लिए ही था। फ्रांस ने अमरीका और ब्रिटेन के दबाव के अधीन इस क्षेत्र से अपनी सेनायें वापस बुला लीं और इसको असैनिक क्षेत्र घोषित कर दिया। घोषणा यह थी कि जर्मनी भी इसको असैनिक क्षेत्र ही रहने देगा।

परन्तु जिस दिन हिटलर ब्रिटेन से शान्तिमय रहने की बातचीत कर रहा था, यहाँ तक कि उसने ब्रिटेन और पौलैण्ड के राजदूतों को सन्धि करने के लिए प्रस्ताव दिया था, ठीक उसी दिन जर्मनी की सेना इस असैनिक क्षेत्र में प्रविष्ट कर इस पर अधिकार कर रही थीं।

जर्मनी आशंका कर रहा था कि फ्रांस इस समय जर्मन सेनाओं का विरोध करने के लिए अपनी सेनायें इसी क्षेत्र में भेज देगा। परन्तु फ्रांस ने ब्रिटेन से राय कर ली कि क्या किया जाय। ब्रिटेन ने राय दी कि बातचीत करनी चाहिए, युद्ध इस मर्ज की दवा नहीं है। ब्रिटेन का विचार था कि मित्र राष्ट्रों की शान्तिप्रियता देख कर जर्मनी युद्ध का विस्तार नहीं करेगा।

कदाचित् ऐसा होता, यदि १९१८ में जर्मनी के नागरिकों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध की भयंकरता का स्वाद मिलने के बाद सन्धि होती। १९१४-१८ में युद्ध फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड के क्षेत्रों में होता रहा था। वहाँ के नगर तबाह हुए थे, वहाँ के खेतों और कारखानों की तबाही हुई थी। जर्मनीवालों को तो दूसरों के घर फूंकने का स्वाद ही मिला था। इस कारण फ्रांस और ब्रिटेन की भलमनसाहत में भी उनको उनकी कायरता अनुभव हुई थी।

जर्मनी का द्वितीय युद्ध १९३६ में आरम्भ हुआ माना जाना चाहिए। ७ मार्च १९३६ को राइनलैंड पर हिटलर ने बलपूर्वक अधिकार कर लिया। इस समय ब्रिटेन के समाचार-पत्र यह राग आलाप रहे थे कि हिटलर सत्य ही शान्ति चाहता है।

इंग्लैण्ड में उस समय कम से कम एक नेता था जो हिटलर की तैयारी को देख इंग्लैण्ड को भी सैनिक तैयारी करने के लिए कहता रहता था। वह था विन्सैन्ट चर्चिल। उसका कहना था कि युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए, शस्त्रास्त्र कम नहीं करने चाहिए इनमें उन्नति होनी चाहिए। वह हवाई सेना की वृद्धि के लिए कहता था। परन्तु उस समय के इंग्लैण्ड के प्रायः राजनीतिज्ञ चर्चिल को युद्ध के लिए पागल (War-monger) मानते थे।

: २ :

आस्ट्रिया को आत्मसात् करना

१९३३ में हिटलर के जर्मनी का चांसलर बनते ही जर्मनी के पड़ोसी देशों में रहने वाले जर्मनों में षड्यन्त्र आरम्भ हो गए थे। १९३४ में आस्ट्रिया में यह षड्यन्त्र चरम सीमा पर जा पहुँचा। यह षड्यन्त्र दो ओर से हो रहा था। एक रूस की ओर से, दूसरे जर्मनी की ओर से। रूस के पिट्ठू आस्ट्रिया के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोशलिस्ट राज्य को पलट कर रूस के अधीन करना चाहते थे और जर्मनों के खुफिया षड्यन्त्रकारी क्रान्ति उत्पन्न कर आस्ट्रिया को जर्मनी के अधीन कर देना चाहते थे। दोनों ने अपनी प्राइवेट सेनायें बनाई हुई थीं।

आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री डोलफैस ने कम्युनिस्ट और नाज़ी भय को देख इटली और हंगरी से सन्धि कर ली। पहले कम्युनिस्टों ने बगावत आरम्भ की, परन्तु सरकार ने दबा दी। कम्युनिस्ट दल अवैध घोषित कर दिया गया। इस पर कम्युनिस्ट नाज़ी पार्टी में सम्मिलित हो गये और एक दिन प्रधानमन्त्री डोलफस की हत्या कर दी गयी।

सम्भावना थी कि इस हत्या के होते ही जर्मनी सेना भेज कर आस्ट्रिया पर अधिकार कर लेगा। परन्तु हिटलर को यह भय था कि इटली से युद्ध छिड़ जायेगा। डोलफस की हत्या के साथ इटली ने अपनी सेना को चलायमान कर दिया था।

परन्तु १९३८ में परिस्थिति बदल गई। हिटलर ने इटली के तानाशाह मुसोलिनी से संधि कर ली थी। हिटलर के प्रोत्साहन पर आस्ट्रिया के नाज़ियों ने मार-काट आरम्भ कर दी। सरकार उनको रोकती तो जर्मनी में यह आस्ट्रिया सरकार का जर्मनों पर अत्याचार प्रकट किया जाता।

इस विषय पर बात करने के लिये हिटलर ने आस्ट्रिया के प्रधान मन्त्री शुशनिग को बुलाया। १२ फरवरी १९३८ को यह भेंट हुई। बिना किसी प्रकार की औपचारिकता के हिटलर ने छूटते ही शुशनिग को डाँटना आरम्भ कर दिया और एक घंटे की डाँट-फटकार के अन्त में कहा, "मिस्टर शुशनिग! यह समझ लो कि मैं आस्ट्रिया के सब सुरक्षा के प्रबन्ध पाँच मिनट में तोड़-फोड़ सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

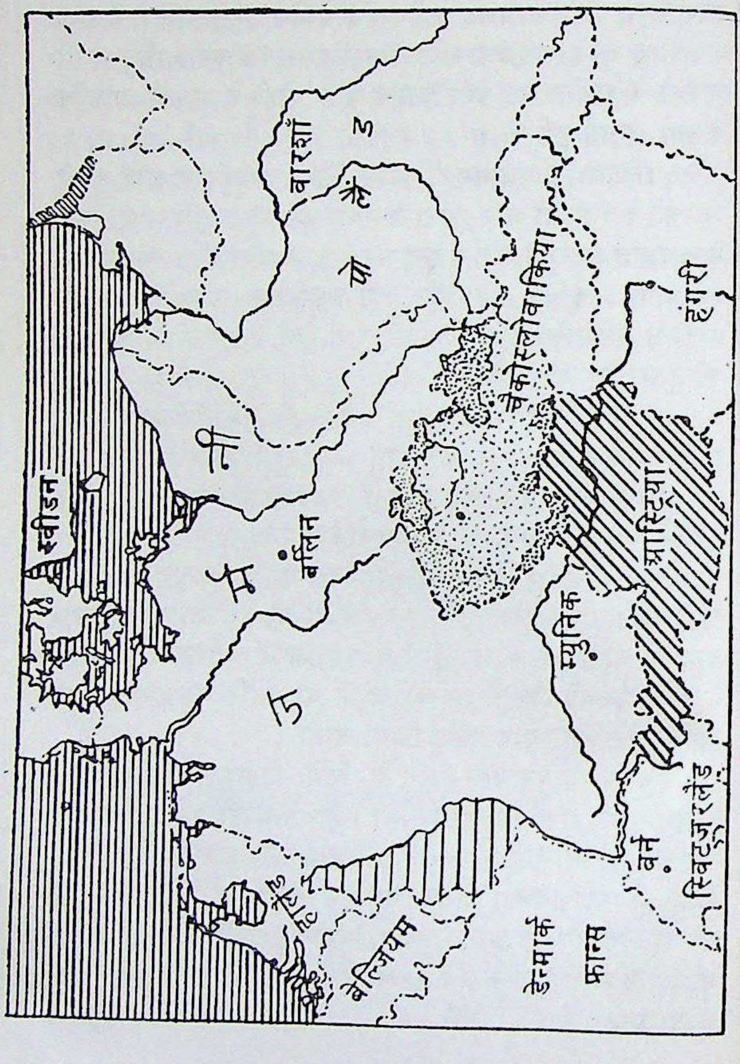

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस धमकी के उपरान्त सायंकाल पुन: भेंट हुई। उसमें एक कागज़ पर कुछ शर्तें लिख कर शुशनिग को हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया। इनमें कुछ ऐसी शर्तें थीं जिनको शुशनिग मानने का अधिकार नहीं रखता था, केवल आस्ट्रिया का प्रधान विलहैम मिकलस ही स्वीकार अथवा अस्वीकार कर सकता था।

यह जानकर हिटलर ने पुन: डाक्टर फोन शुशनिग को धमकाना आरम्भ कर दिया और लिखी शर्तों को मानने के लिए तीन दिन का समय देकर उसको वापस भेज दिया। शुशनिग ने मिकलस को जाकर सारी परिस्थिति से अवगत कराया तो वह समझ नहीं सका कि क्या करे। उसका स्वाभिमान तो यह कहता था कि जर्मनी की शर्तें नहीं माननी चाहिएं, परन्तु वह स्वयं निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे।

तीन दिन की अवधि समाप्त होने पर तीन दिन का समय और माँगा गया। इस प्रकार १८ फरवरी तक का समय लिया गया।

१६ फरवरी को एक शर्त मान ली गई और उसके अनुसार सब नाज़ी, जो बलवा करने के अपराध में पकड़े गए थे, छोड़ दिये गए। यहाँ तक कि डोलफस की हत्या के अपराधी भी छोड़ दिये गये। हिटलर की शर्तों में एक शर्त यह भी थी कि डॉक्टर शशुनिग के स्थान पर नाज़ी पंचमाँगी इन्क्वार्ट चांसलर बना दिया जाये। यह प्रेज़िडेंट मिकलस नहीं माना। वह इसे आस्ट्रिया के घरेलू मामले में अनुचित हस्तक्षेप समझता था।

इस पर २० फरवरी को हिटलर ने रीख के सामने एक व्याख्यान में आस्ट्रिया को बहुत फटकारा।

२४ फरवरी को शुशनिग ने हिटलर को रेडियो पर उत्तर दिया। उसने कहा, "हमने हिटलर की सब उचित माँगें स्वीकार कर ली हैं। परन्तु आस्ट्रिया के मान के नाते हम अपनी सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रबन्ध में हिटलर की आज्ञा नहीं मान सकते । डॉ० इन्क्वार्ट को चांसलर नहीं बनाया जा सकता।"

जब रेडियो पर शुशनिग घोषणा कर रहा था, बीस हज़ार नाज़ियों की एक भीड़ जिसमें वे लोग भी थे जो अभी हिटलर के कहने पर जेलों से मुक्त कर दिये गये थे, वियाना की सड़कों पर ऊधम मचा रहे थे ।

इस समय मुसोलिनी से सम्पर्क बनाने का यत्न किया गया । परन्तु यह सम्पर्क स्थापित नहीं हो सका । बाद में यह समाचार आया कि आस्ट्रिया की विपत्ति के समय, मुसोलिनी उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता ।

इस पर प्रेजिडेंट मिकलस ने आस्ट्रिया की जनता से मत-दान करने के लिए कहा कि वे हिटलर के बताये हुए व्यक्ति को चांसलर बनाना चाहते हैं अथवा नहीं । हिटलर यह नहीं चाहता था । उसको और मिकलस को भी विश्वास था कि डॉ० इन्क्वार्ट के पक्ष में बहुत अल्पमत है । आस्ट्रिया के सब जर्मन भी उसके पक्ष में नहीं थे ।

यह मतदान (plebiscite) १२ मार्च १९३८ को होने वाला था । और ११ मार्च को बहुत प्रातःकाल पुलिस को सूचना मिल गई कि जर्मनी-आस्ट्रिया सीमा पर जर्मन सेनायें देश में घुसने के लिए तैयार खड़ी हैं ।

प्रेज़िडेंट मिकलस को कहा गया कि वह जनगणना न कराये और डॉ० इन्क्वार्ट को चांसलर बना दे । किन्तु प्रेज़िडेंट नहीं माना ।

शुशनिग डर गया और वह त्यागपत्र देकर अपना स्थान डॉ० इन्क्वार्ट को देने के लिए तैयार हो गया । परन्तु जब यह बात हिटलर को कही गई तो उसने कहा, "इतना पर्याप्त नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीस इन्क्वार्ट और मिकलस जर्मन फ्यूहरर को एक तार भेजें कि आस्ट्रिया में सख्त उपद्रव हो रहे हैं इस कारण जर्मन सरकार अपनी सेना भेजकर यहाँ शान्ति स्थापित करे।"

यह सरासर झूठ था। आस्ट्रिया में पूर्ण शान्ति थी। कुछ नाज़ी जलूस इत्यादि निकाल रहे थे। परन्तु किसी प्रकार का रक्तपात नहीं हो रहा था।

प्रेजिडेंट मिकलस तत्कालीन परिस्थिति में कुछ कर देता तो वह अनुचित न होता। परन्तु वह नरम स्वभाव का व्यक्ति था। इसलिए रक्तपात की आज्ञा नहीं दे सका।

ऐसा तार तो इन्क्वार्ट भी देने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब एक झूठा तार बनाया गया, जो कभी भेजा नहीं गया था। उस झूठे तार में लिखा गया कि घोर उपद्रव हो रहे हैं, सहस्रों नाज़ियों की हत्या हो गयी है और उनके रक्त से वियाना की सड़कें लाल हो गई हैं। ऐसी बातें लिख कर हिटलर से प्रार्थना की गई कि वह जर्मन सेना भेज कर वहाँ शान्ति स्थापित करे।

१२ मार्च को यह तार समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो गया। परन्तु सेना तो आस्ट्रिया में पहले ही प्रवेश कर चुकी थी और आस्ट्रिया जर्मनी का एक भाग बन चुका था।

: ३ :

तीसरा मोर्चा चैकोस्लोवाकिया

आस्ट्रिया को रीख में सम्मिलित किया गया १२ मार्च १९३८ को और चैकोस्लोवाकिया का झगड़ा आरम्भ हो गया। यों तो हिटलर इस देश को आत्मसात करने के लिए 'मीन काफ' में ही लिख चुका था और इसके लिए यत्न १९३७ जून मास से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ हो चुका था, परन्तु आस्ट्रिया की पराजय के अनन्तर ही इस पर बल डाला जाने लगा।

चैकोस्लोवाकिया में दस लाख हंगेरियन रहते थे। पाँच लाख रुथीनियन, पैंतीस लाख सुडेटन जर्मन, पचीस लाख स्लोवाक थे। इस प्रकार यह राज्य एक प्रकार से चूं-चूं का मुरब्बा था। इस देश को वारसेल्ज़ की सन्धि के अनुसार संगठित किया गया था। यह एक भूल थी। इस पर भी यहाँ की सरकार ने सब अल्पमत वालों को पर्याप्त स्वतन्त्रता एवं अधिकार दे रखे थे और सन् १९३७ तक किसी प्रकार का वैमनस्य नहीं था। छोटे-मोटे असन्तोषों को छोड़ कर सब सामूहिक कामों में सहयोग देते थे। सन् १९३७ में जर्मनी के धन से यहाँ नाज़ी पार्टी का निर्माण हुआ। एक कोनराड हैनिलीन नाम का पंचमाँगिया वहाँ खड़ा किया गया और वह सुडेटन जर्मनों में नाज़ी पार्टी का संगठन करने लगा। ५ हज़ार मार्क्स प्रतिमास खर्च करने के लिए जर्मन सरकार हैनिलीन के पास भेजती थी।

१२ मार्च १९३८ को आस्ट्रिया जर्मनी में सम्मिलित किया गया और २८ मार्च को हैनिलीन हिटलर से राय करने के लिए बर्लिन जा पहुँचा। वहाँ से लौटते ही सूडेटनलैंड में बलवे और लूट-मार होने लगी। दूसरी ओर जर्मनी के समाचार-पत्रों में चैकोस्लोवाकिया के जर्मनों के दुःख-दर्द की मिथ्या कहानियाँ छपने लगीं।

चैकोस्लोवाकिया सरकार की फ्रांस, ब्रिटेन और रूस से संधि थी कि इस देश पर किसी प्रकार के आक्रमण पर वे इसकी सहायता करेंगे। फ्रांस और रूस ने आरम्भ में तो इस संधि के पालन का आश्वासन दिया, परन्तु ब्रिटेन गूंगी भाषा में बात करता रहा। जब हैनिलीन ने लूट-मार आरम्भ की और जर्मन सेनायें चैको-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्लोवाकिया की सीमा पर एकत्रित होने लगीं तो लंदन स्थित जर्मनी के राजदूत ने ब्रिटेन की सरकार को बताया कि सुडेटन-लैंड में जर्मनों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। ब्रिटेन की प्रथम प्रतिक्रिया यह थी कि जर्मनी और चैकोस्लोवाकिया में सुलह हो जानी चाहिए। इसके लिए यत्न आरम्भ किया गया। हिटलर की प्रथम माँग थी कि वहाँ के जर्मनों को अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो। इस पर ब्रिटेन का प्रधानमन्त्री नेविल चैम्बरलैन हिटलर से मिलने के लिए जा पहुँचा। इससे प्रोत्साहित होकर हिटलर की माँग बढ़ गई। उसने कहा कि सुडेटनलैंड को एक स्वतंत्र राज्य बना दिया जाय। चैम्बरलेन यह मानने के लिए तैयार नहीं था। इस पर फ्रांस से राय करने के लिये समय माँगा गया। हिटलर ने अपनी योजना सफल होती देख, अपनी सेना को और अधिक तीव्र गति से सीमा पर भेजना आरम्भ कर दिया।

फ्रांस तो जर्मनी से इस विषय पर भिड़ जाना चाहता था। इंग्लैंड युद्ध से बचना चाहता था। चैम्बरलेन पुनः हिटलर से मिलने गया। इस भेंट में चैम्बरलेन की आँखें खुलीं। हिटलर की माँगें और बढ़ गयी थीं। एक भीरु व्यक्ति की भाँति चैम्बरलेन ने विश्व शान्ति का बहाना बना हिटलर की माँगें स्वीकार कर लीं।

इसके उपरान्त तो हिटलर ने चैकोस्लोवाकिया के एक भाग को जर्मनी में सम्मिलित करने की माँग उपस्थित कर दी। इस माँग को चैम्बरलेन मान नहीं सका और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह इसका घोर विरोध करेगा। इस पर हिटलर के संकेत पर इटली के तानाशाह मुसोलिनी ने एक कान्फरेन्स बुलाकर उसमें बातचीत का प्रस्ताव कर दिया।

यह सम्मेलन भी म्यूनिख में सम्पन्न हुआ। इसमें चैम्बरलेन, मुसोलिनी तथा फ्रांस के डिलेडियर भी उपस्थित थे। जब चैम्बर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेन लन्दन से इस कान्फरेन्स के लिये चला तो एक समाचार-पत्र के संवाददाता ने उससे पूछा--"क्या इस कान्फरेन्स में चैकोस्लोवाकिया का भी एक प्रतिनिधि होगा ?"

चैम्बरलेन ने गम्भीर भाव से कह दिया, "नहीं।"

"और आप क्या करने के लिये जा रहे हैं ?"

चैम्बरलेन मुस्कराकर चुप रह गया। इसके कुछ दिन पूर्व चैम्बरलेन ने ब्रिटेन की पार्लियामेंट में कहा था, "जब मैं गौडसबर्ग में गया था तो मैं समझ रहा था कि हिटलर से उस प्रस्ताव की व्याख्या पर विचार होगा जो बरकसगाडेन में उसने प्रस्तुत किया था। परन्तु जब वहाँ हिटलर ने नया प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया तो मैं चकित रह गया। मैं समझता हूँ कि हिटलर जान-बूझकर यह धोखा नहीं कर रहा था। इस पर भी मैं चकित था...... ।"

इसके साथ ही चैम्बरलेन ने रेडियो पर अपने एक भाषण में यह कहा था—"यह कितनी विचित्र और अनहोनी बात हो रही है कि एक दूर देश में झगड़े के कारण, जहाँ के लोगों के विषय में हम कुछ नहीं जानते, हम यहाँ खाइयाँ खोद रहे हैं।

"हमारी सहानुभूति छोटी जातियों से है, परन्तु उनके लिये हम पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य को युद्ध में नहीं झोंक सकते।"

रेडियो पर दिया गया चैम्बरलेन का यह संदेश फ्रांस में भी सुना गया और वहाँ का जोश भी ठंडा पड़ गया।

चैम्बरलेन ने हिटलर को लिखा—

"आपका पत्र मिला। उससे मुझे विश्वास हो रहा है कि आपको सब कुछ जो आप चाहते हैं, मिल गया है। मैं स्वयं बर्लिन में आने को तैयार हूँ और फ्रांस तथा इटली के साथ मिलकर आपके प्रतिनिधियों को भूभाग दिलाने का यत्न कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता हूँ ।"

इस सब समय चैकोस्लोवाकिया डटा था और कह रहा था कि वह जर्मनी को कुछ नहीं देगा और फ्रांस और ब्रिटेन को अपनी संधियों को सम्मानित करना चाहिये ।

फ्रांस कहता था कि जब तक ब्रिटेन साथ नहीं देगा वह चैको-स्लोवाकिया की सहायता नहीं कर सकेगा । और ब्रिटेन कह रहा था कि चैकोस्लोवाकिया को हिटलर की वात मान लेनी चाहिये ।

चैकोस्लोवाकिया कह रहा था कि विवशता में चाहे जो हो जाये, परन्तु स्वेच्छा से हम जर्मनी के अन्याय को सहन नहीं करेंगे ।

म्युनिख कान्फरेन्स में चैकोस्लोवाकिया के दो प्रतिनिधि भी भाग लेने के लिये आए, परन्तु हिटलर ने उनका मुख तक देखना स्वीकार नहीं किया । इस पर चैम्बरलेन ने हिटलर को प्रसन्न करने के लिये उसकी बात मान ली और दोनों प्रतिनिधियों को बाहर खाली कमरे में बैठे रहने के लिए कह दिया ।

इस कान्फरेन्स में हिटलर ने उस क्षेत्र का मानचित्र प्रस्तुत कर दिया जो रीख में सम्मिलित होना चाहिये । यह मानचित्र वह नहीं था, जो चैम्बरलेन को गोडेसबर्ग में दिया गया था । इसमें पहले से बहुत अधिक क्षेत्र था । चैम्बरलेन ने कहा, यह वह मानचित्र नहीं है जो पहले दिया गया था । हिटलर ने कह दिया कि उसे गलत समझ लिया जाय ।

सब विस्मय में मुख देखते रह गये । चैम्बरलेन ने पूछा, "जिस क्षेत्र को रीख ले रही है, उस पर स्थित सम्पत्ति के विनिमय में क्या दिया जायेगा ?"

हिटलर ने दो टूक जवाब देते हुए कहा, "कुछ नहीं ।"

इस पर भी सब चुप बैठे रहे । हिटलर ने कह दिया, "इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हस्ताक्षर कर दो ।"

चारों ने हस्ताक्षर कर दिये और कान्फरेन्स विसर्जित हो गई। जब चैम्बरलेन कान्फरेन्स से बाहर आया तो चैकोस्लोवाकिया के प्रतिनिधियों ने उससे पूछा, "क्या निर्णय हुआ है ?"

चैम्बरलेन ने मानचित्र हाथ में देते हुए उनसे कहा, "चिह्नित क्षेत्र खाली कर दो ।"

"हमसे बिना पूछे यह निर्णय कर दिया गया है ?"

"हाँ, योरुप और विश्व शांति के लिये यह आवश्यक है ।"

चैकोस्लोवाकिया के एक प्रतिनिधि जान मसारिक ने क्रोध से लाल होते हुए कहा,"यदि मेरे देश के बलिदान से आप दुनिया में शांति स्थापित कर सकें तो मैं आपको बधाई दूंगा, और यदि नहीं ! तो भले लोगो, परमात्मा तुम्हारी आत्मा की रक्षा करे ।"

अगले दिन १ अक्टूबर को, हिटलर की सेनाएँ चैकोस्लोवाकिया की सीमा में घुस गईं और उसने सुडेटनलैंड पर अधिकार कर लिया ।

१२ मार्च १९३८ को चैकोस्लोवाकिया का अन्त्येष्टि संस्कार हो गया। पूर्ण ज़ेकोस्लोवाकिया रीख में सम्मिलित कर लिया गया ।

: ४ :

पोलैण्ड पर आक्रमण

चैकोस्लोवाकिया के समाप्त होने पर इसके कुछ क्षेत्र पोलैण्ड और कुछ रूस में चले गये । स्लोवाक स्वतंत्र देश बनाने में लग गये। इस देश का एक भाग हंगरी के अधिकार में भी चला गया।

ब्रिटिश पार्लियामैंट में प्रधानमन्त्री चैम्बरलेन से पूछा गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि चैकोस्लोवाकिया की रक्षा के लिये दिये गये आश्वासन का क्या हुआ ?

प्रधानमंत्री का उत्तर था—'जो कुछ अब हुआ है, उसका मुझे भारी शोक है। परन्तु इससे हमें अपने पथ पर चलना छोड़ नहीं देना चाहिये। हमको स्मरण रखना चाहिये कि भूमण्डल पर के सब लोगों की इच्छा शांति की आशा पर केन्द्रित है।'

प्रधानमंत्री का यह कहना मिथ्या था। कम से कम जर्मनी के नाज़ी दल वाले और रूस के बोलशेविक दल वाले शांति के इच्छुक नहीं थे और न शांति के लिये प्रयत्नशील थे।

ये दोनों देश अपनी सीमाएँ फैलाने के लिये परस्पर बात-चीत करने लगे थे। चैकोस्लोवाकिया के पश्चात् जर्मनी ने स्लोवाक, हंगरी और चैक क्षेत्रों को अपनी रक्षा में ले लिया। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मध्य योरुप के प्रायः सब छोटे-मोटे देश रीख में सम्मिलित कर लिए गये थे।

इससे पोलैंड जर्मनी से घिर गया। जर्मनी ने पोलैंड को डैनज़िग खाली करने के लिये कह दिया और पोलिश इलाके में से पूर्वी प्रशिया तक जाने के लिये सड़क बनाने की इच्छा प्रकट कर दी।

इस वार पोलैंड का राजदूत लंदन पहुँचा और इंग्लैण्ड ने फ्रांस के साथ पोलैंड की रक्षा में सहायता का वचन दे दिया। इस पर भी यह वचन चैकोस्लोवाकिया के साथ विश्वासघात के बाद जर्मनी पर कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सका।

१५ अप्रैल १९३८ को जर्मनी ने बोहेमिया और मोरविया पर अपनी सुरक्षा घोषित कर दी। अभिप्राय यह था कि उसने पोलैंड पर आक्रमण की तैयारी कर दी थी।

इस तैयारी से रूस की स्थिति में भी अंतर पड़ गया। रूस

—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रधानमंत्री स्टालिन ने एक ओर जर्मनी से बात आरम्भ कर दी और दूसरी ओर ब्रिटेन तथा फ्रांस से। जर्मनी से स्टालिन चैकोस्लोवाकिया के ऐकोडा कारखाने के हथियार खरीदना चाहता था और दूसरी ओर ब्रिटेन व फ्रांस से वह सैनिक संधि चाहता था। ब्रिटेन ने रूस के प्रस्ताव पर ध्यान नहीं दिया। जर्मनी तथा रूस में शस्त्रास्त्र के व्यापार की बातचीत होते-होते, पोलैंड को विजय कर बाँट लेने पर बात चल पड़ी।

रूस की नीति में परिवर्तन ब्रिटेन को दिखाई नहीं दिया। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री अभी भी आशा कर रहे थे कि जर्मनी शांत रहेगा। जर्मनी अपनी कूटनीति में सफल हुआ।

३ अप्रैल १९३९ को हिटलर ने सेना अधिकारियों को आज्ञा दे दी कि प्रथम सितम्बर १९३९ तक पोलैंड पर आक्रमण की तैयारी पूर्ण हो जानी चाहिये।

इस बीच के काल में हिटलर, चैकोस्लोवाकिया की भाँति, पोलैंड में भी बिना युद्ध किये विजय प्राप्त करने में लीन हो गया। इस बार हिटलर ब्रिटेन और फ्रांस को मूर्ख नहीं बना सका। एक बात करने में वह अवश्य सफल हो गया कि रूस की ब्रिटेन और फ्रांस से सन्धि नहीं हो सकी। इसमें जहाँ हिटलर की चतुराई का प्रभाव हुआ, वहाँ ब्रिटेन के प्रधानमंत्री की मूर्खता का भी कम भाग नहीं था। चैम्बरलैन अभी तक भी जर्मनी पर नीतिपूर्वक विजय प्राप्त करने का यत्न कर रहा था।

इस समय अमरीका के प्रधानमंत्री रूज़वैल्ट ने भी योरुप की समस्याएँ सुलझाने के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित कर दीं। परंतु चैम्बरलैन को उस पर भी विश्वास नहीं था।

मई २३, १९३९ को हिटलर ने अपने सैनिक अधिकारियों को बुलाकर कह दिया, "जर्मनी की समस्याएँ बिना युद्ध के सुल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाई नहीं जा सकतीं। हमें योरुप के अन्य देशों पर आक्रमण कर, उनकी मुक्ति (lebeusraum) दिलाने का प्रयत्न करना होगा।"

इस घोषणा के साथ-साथ जर्मनी ने अपनी सेनाएँ पोलैण्ड की सीमा पर भेजनी आरम्भ कर दीं। यद्यपि रूस से बातचीत आरम्भ हो गई थी, परंतु संधि नहीं हुई थी। अतः हिटलर ने इस दिशा में यत्न आरम्भ कर दिया। रूस के विदेशमंत्री मोलो-तोव से बातचीत करने के लिये जर्मनी का विदेशमंत्री रिबनट्रोप २३ अगस्त १९३९ को मास्को जा पहुँचा।

रिबनट्रोप के रूस से संधि कर लेने पर हिटलर को इतना विश्वास था कि २२ अगस्त को ही उसने सैनिक अधिकारियों की कान्फरेन्स में कह दिया, "अब युद्ध होगा। मुसोलिनी हमारे साथ होगा। फ्रैंको और रूस निष्पक्ष रहेंगे। हम पोलैण्ड को कुछ ही दिनों में समाप्त कर देंगे।"

हिटलर ने बताया, "जर्मनी के लिये इससे अच्छा अवसर कई वर्ष तक पुनः नहीं आ सकता। मुझे विश्वास है कि ब्रिटेन और फ्रांस लड़ नहीं सकते। उनके लिये जर्मनी पर आक्रमण करने को कोई मार्ग नहीं है। वे जर्मनी पर घेरा डाल सकते हैं। परन्तु इसका जर्मनी पर कोई प्रभाव नहीं होगा।"

वास्तव में पोलैण्ड और इंग्लैण्ड, रूस को अपनी सैनिक-शक्ति का भास नहीं करा सके थे। यह इसलिये कि दोनों देश सैनिक रूप में किसी लम्बी लड़ाई के लिए तैयार नहीं थे।

मास्को पहुँच रिबनट्रोप ने जर्मनी के संबंध जापान, इटली, स्पेन से बताये। उसने अपनी शक्ति और युद्ध के लिये अपनी तैयारी का भी वर्णन किया। साथ ही उसने रूस को जर्मनी से मित्रता करने के लाभ भी बताए। रूस के लिए पूर्वी योरुप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

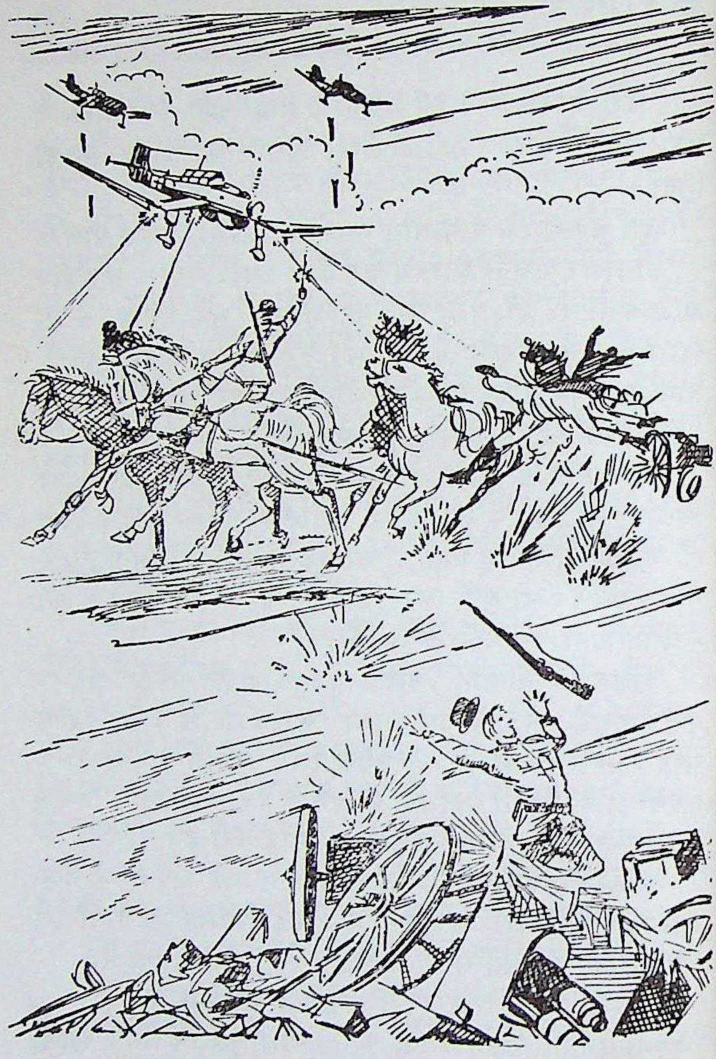

१ सितम्बर १९३९ को जर्मनी ने पोलेंड पर आक्रमण कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मध्य एशिया तथा उत्तरी चीन में विस्तार के अवसरों पर प्रकाश डाला।

रिबनट्रोप ने यह भी बताया कि इंग्लैंड स्वयं दुर्बल है। उससे मित्रता करने पर रूस को सब युद्ध का भार अपने ऊपर लेना होगा। साथ ही किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं होगी।

इस संधि में रूस और जर्मनी ने एक-दूसरे पर आक्रमण न करने का वचन दिया और पूर्वी योरुप में अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र तथा पोलैंड के विभाजन का निर्णय कर लिया।

अतएव एक सितम्बर १९३९ को प्रातः ४-४५ पर जर्मन सेना ने पोलैंड पर तीन ओर से आक्रमण कर दिया और तीनों सेनाओं का मुख पोलैंड की राजधानी वारसा की ओर था।

: ५ :

मुख्य युद्ध आरम्भ

हिटलर ने ३ अप्रैल १९३९ को ही अपने सैनिक अधिकारियों को बता दिया था कि पहली सितम्बर को पोलैंड पर आक्रमण होगा। इस दिन ४.४५ पर जर्मन हवाई जहाज भयंकर गुँजार करते हुये पोलैंड के नगरों और कारखानों पर गोले बरसाने लगे। जर्मन टैंक गड़गड़ाते हुए पोलैंड की सड़कों पर दौड़ने लगे। सैनिक दारू बारूद से पुल, रेल की सड़कें उड़ाने लगे। पोलैंड की सेनाएँ पन्द्रह मील इधर सामने खड़ी मिलीं और घमासान का युद्ध हो गया।

जर्मन सेना में ५६ डिविजन थे। इसके अतिरिक्त जर्मनी के पास और भी सुरक्षित सेना पीछे खड़ी थी। पोलैंड की कुल सेना ४० डिविज़न थी और इन्होंने ३० डिविजन सेना, जर्मन सैनिकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रोकने के लिये आगे भेज दी।

पोलैंड के पास टैंक इत्यादि लड़ाई का सामान भी उतना श्रेष्ठ नहीं था, जितना जर्मनी के पास था। पोलैंड की सेना में १२ ब्रिग्रेड तो घुड़सवारों की थीं और ये बेचारे टैंकों और तोपों के सामने अपने नेजे और तलवारों से, बहादुरी से, परन्तु प्रभाव-हीन लड़ाई लड़ते रहे।

हवाई जहाज़ों की बमबाज़ी से पुलों और सड़कों के टूट-फूट जाने के कारण एक तिहाई के लगभग पोल सेना तो लड़ ही नहीं सकी। पन्द्रह दिन तक बहादुर पोलैंड वाले जर्मनी की यंत्र सज्जित सेना का विरोध करते रहे, परन्तु वे जर्मन सेना की संख्या और शक्ति के कारण उनको वारसा पहुँचने से रोक नहीं सके। पन्द्रह सितम्बर को विस्चुला नदी के किनारे पर घोर संग्राम हुआ और इसमें भी जर्मनी की विजय हुई। इसके बाद एक सप्ताह से अधिक समय जर्मन सेना की पूर्ण शक्ति को वारसा के नागरिकों के विरोध को दबाने में लगा।

जर्मनी की विजय की आशा बनते ही रूस की सेनायें भी पोलैंड में घुस आईं और उस रेखा तक बिना विरोध के बढ़ आयीं, जहाँ तक रिबनट्रोप से सन्धि में लिखा था।

रूस के विषय में दो मत हैं। एक तो यह कि रूस ने नितांत स्वार्थपरता का व्यवहार किया। दूसरा मत यह है कि उस समय के योरुप में कोई भी निस्वार्थभाव से व्यवहार नहीं कर रहा था। ब्रिटेन और फ्रांस का चैकोस्लोवाकिया के विषय में व्यवहार केवल स्वार्थ के अधीन था।

जर्मनी ने एक सितम्बर को पोलैंड की सीमा का उल्लंघन किया था। ३ सितम्बर को ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी और उसी दिन से ब्रिटेन के साथ समुद्र पर युद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ हो गया था।

जर्मन पण्डुब्बियों ने समुद्र पर अंग्रेज़ी जहाज़ों को डुबोना आरम्भ कर दिया था। सितम्बर के प्रथम सप्ताह में ११ अंग्रेज़ी जहाज़ डूबे। इनका भार ६४,५९५ टन था। द्वितीय सप्ताह में १३ जहाज़ जिनका भार ६४,९९८ था, तृतीय सप्ताह में १२,७५० टन भार के ३ जहाज तथा चतुर्थ सप्ताह में ९,६९७ टन भार के दो जहाज़ डूबे।

अमरीका का प्रेज़िडेंट रूज़वैल्ट आरम्भ से ही युद्ध में रुचि लेने लगा था। उसको कुछ ऐसा समझ आ रहा था कि अमरीका इस युद्ध में एक विशेष भाग लेने वाला है।

इस पर भी ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर आक्रमण नहीं किया। पोलैंड की सुरक्षा और सहायता के लिये, सन्धि के अनुसार उन्हें ऐसा करना चाहिये था।

यह प्रतीत होता है कि ब्रिटेन और फ्रांस लड़ाई आरम्भ होने तक यह आशा लगाये बैठे थे कि लड़ाई से बचने का कोई न कोई मार्ग निकल आवेगा। यह बात स्पष्ट है कि चैम्बरलैन और ब्रिटिश राजदूत नैविल हैण्डरसन ३१ अगस्त सायंकाल तक यत्न करते रहे थे कि जर्मनी और पोलैंड अपनी समस्या बात-चीत से सुलझा लें। हिटलर इनको चकमा देता रहा था कि वह बातचीत के लिये तैयार है और अपनी सेनाओं को सीमा पर एकत्रित करता रहा था।

प्रथम सितम्बर को युद्ध आरम्भ हुआ। उसी दिन ९-३० बजे चैम्बरलैन ने हिटलर को अल्टिमेटम (ultimatum) दे दिया कि दो दिन में अपनी सेनायें वापस बुला लो। ३ सितम्बर को युद्ध की घोषणा की गई और उस समय युद्ध-परिषद् (War-council) निर्माण हुई। इसके बाद सेना को चालना दी जाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांस के जनरल गैमेलीन ने २३ अगस्त को पोलैंड को तो कहा था कि उनके पास युद्ध क्षेत्र में पैंतीस से अड़तीस डिविजन होंगे। परन्तु जब युद्ध आरम्भ हो गया तो गैमेलीन ने दलादियर से कहा कि फ्रांस की, युद्ध के लिये तैयारी नहीं और भविष्य में भी दो वर्ष तक वह युद्ध में सेना नहीं भेज सकता।

ब्रिटेन ११ अक्तूबर तक अर्थात् युद्ध आरम्भ होने से पांच सप्ताह बाद तक चार डिविजन अर्थात् केवल १५,८००० व्यक्ति फ्रांस में भेज सका था। यह तो जर्मनी से युद्ध के लिये, बहुत कम थे।

अक्तूबर मास में भी फ्रांस में युद्ध के कोई लक्षण नहीं दिखाई देते थे। यह हिटलर के अनुमान के अनुकूल था। कुछ युद्ध विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि यदि फ्रांस और इंग्लैंड इन दो महीनों में जर्मनी के राइनलैंड पर आक्रमण कर देते तो इस युद्ध का रूप बदल जाता। वास्तविकता यह है कि ब्रिटेन और फ्रांस केवल दबदबे से काम लेना चाहते थे। ये इस युद्ध में सम्मिलित भी न होते, यदि उनको विश्वास हो जाता कि पोलैंड के पश्चात् जर्मनी, फ्रांस और फिर इंगलैंड पर आक्रमण नहीं करेगा।

: ६ :

डेन्मार्क और नार्वे की विजय

हिटलर अपनी सफलता के लिये यह चाहता था कि जब तक वह पोलैंड को समाप्त नहीं कर देता तब तक ब्रिटेन और फ्रांस की सेनाओं से झड़प न हो। वह अपनी सब तैयारी होने पर भी दो मोर्चों पर एकदम लड़ना नहीं चाहता था। ब्रिटेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फ्रांस ने उसकी इच्छाओं को पूर्ण किया। इन दोनों देशों ने अपनी सेनायें जर्मनी सीमा पर एकत्रित तो कर दीं, परन्तु उनको युद्ध आरम्भ करने अर्थात् जर्मन सीमा में घुसने की आज्ञा नहीं दी। यदि ये तीन सितम्बर को ही जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर आक्रमण कर देते तो जर्मनी को समाप्त करना सम्भव था। सत्य बात तो यह है कि इंग्लैंड में विशेष रूप में और फ्रांस में भी कुछ सीमा तक लोग एक दूषित मनोवृत्ति बना बैठे थे। वे समझने लगे थे कि स्वयं सैनिक तैयारी न करेंगे। उनका विचार कुछ ऐसा बन गया था कि शस्त्रास्त्र निर्माण रोक दिये जायें तो युद्ध की सम्भावना कम हो जावेगी। यह मिथ्या दृष्टिकोण था। इस मनोवृत्ति का एक ही परिणाम हुआ कि जब युद्ध आरम्भ हुआ तो ये दोनों देश युद्ध के लिये तैयार नहीं थे और उसका भयंकर परिणाम पोलैंड की विजय के बाद ही आरम्भ हुआ।

९ अक्टूबर १९३९ को हिटलर ने एक पत्र अपने सैनिक अधिकारियों को पढ़कर सुनाया। उस पत्र की मुख्य बातें इस प्रकार थीं —

१. हमें पश्चिमी शक्तियों को कुचल देना है। अन्यथा पूर्व में हमारी विजय के नष्ट हो जाने की सम्भावना है।

२. पश्चिम से जर्मनी का झगड़ा बहुत पुराना है।

३. जर्मनी के युद्ध का उद्देश्य पश्चिमी शक्तियों को नष्ट कर देना है अर्थात् ऐसी स्थिति उत्पन्न करना है कि फ्रांस और ब्रिटेन पुनः सिर उठाने के योग्य रहें ही नहीं।

४. जहाँ तक भूमण्डल की अन्य शक्तियों का सम्बन्ध है, उनको प्रचार के विचार से भिन्न-२ बातें कही जावेंगी, परन्तु इनसे युद्ध का उद्देश्य नहीं बदल सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. रूस की निष्पक्षता का कुछ भी भरोसा नहीं किया जा सकता। युक्ति इस निष्पक्षता के विपरीत है। अतएव रूस के इस युद्ध में सम्मिलित होने से पहले ही फ्रांस और ब्रिटेन को तबाह कर देना चाहिये।

६. जर्मनी लम्बी लड़ाई नहीं चला सकेगा और हमें भय है कि रूस, इटली और अमरीका विपक्ष में सम्मिलित न हो जावें। उस अवस्था में वही स्थिति उत्पन्न हो जावेगी, जो १९१४-१८ के युद्ध की थी।

७. निष्कर्ष यह कि शीघ्रातिशीघ्र ब्रिटेन और फ्रांस को समाप्त करने की योजना तैयार करनी चाहिये।

यह योजना बनाई गई। यद्यपि जर्मन सेना के अधिकारी हिटलर की इस योजना में विश्वास नहीं रखते थे, इस पर भी हिटलर की आज्ञा थी कि ९ नवम्बर को लग्ज़म्बर्ग, बैल्जियम और हौलैंड में घुस जाया जाए और फ्रांस पर आक्रमण कर दिया जाय।

हिटलर चाहता था कि फ्रांस की किलेबन्दियों 'मैगिनोलाइन' को तोड़ने में समय न गंवाया जाय। बैल्जियम के मार्ग से मैगिनोलाइन के पीछे पहुँचा जाय।

परन्तु जर्मनी को इंगलैंड पर प्रभावशाली आक्रमण करने के लिये यह उचित प्रतीत हुआ कि पहले डेन्मार्क और नार्वे पर अधिकार कर लिया जाय। अप्रैल मास १९४० से पूर्व ही ये सूचनायें इंग्लैंड और नार्वे की राजधानी में पहुँचने लगीं कि जर्मनी अपनी नौ-सेना का जमाव नौर्थ सागर और बाल्टिक बन्दरगाहों पर कर रहा है। परन्तु इसका विश्वास नहीं किया गया। इंग्लैंड ने यत्न किया कि नार्वे के समुद्र तट पर समुद्री खानें बिछा दी जायें, जिससे नार्विक का कोयला जर्मनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में न पहुँच सके। परन्तु जर्मनी ने इंग्लैंड के इस विचार को समझकर नॉर्वे और डेन्मार्क पर अधिकार कर लेना उचित समझा।

९ अप्रैल १९४० को नॉर्वे और डेन्मार्क पर जर्मनी ने आक्रमण कर दिया और उन देशों के राजाओं को देश से भाग जाने से रोकने का यत्न किया गया।

९ अप्रैल १९४० को प्रातः ५-२० पर जर्मन राजदूतों ने नॉर्वे और डेन्मार्क की सरकारों को यह पत्रक दे दिया कि इन देशों की, फ्रांस और ब्रिटेन की सेनाओं से रक्षा के लिए जर्मनी इनको अपनी रक्षा में ले रहा है और इसका विरोध न किया जाय। जर्मनी शत्रु के रूप में नहीं अपितु रक्षक के रूप में इन देशों में आ रहा है।

जहाँ डेन्मार्क ने जर्मनी को रक्षक के रूप में स्वीकार कर लिया, वहाँ नॉर्वे ने जर्मनों के विरोध की घोषणा कर दी और जंग छिड़ गई

नॉर्वे के बन्दरगाहों पर यत्रतत्र विरोध हुआ परन्तु जर्मनी की सामर्थ्य के सामने वे कुछ नहीं कर सके और, ब्रिटश नौ-सेना भी नार्वे की सहायता नहीं कर सकी।

नार्वे की राजधानी औसलो पर जर्मन नौ-सेना का विरोध डटकर हुआ और उसको औसलो के किनारे पर उतरने नहीं दिया गया। परन्तु हवाई जहाज़ों से छतरी सेना ने उतर कर हवाई अड्डे पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् जर्मन हवाई जहाज़ों से जर्मन सेना वहाँ पहुँच गई और औसलो पर जर्मनी का अधिकार ९ अप्रैल की सायंकाल तक हो गया।

इस समय अंग्रेज़ी सेना और जहाज नार्वे के उत्तरी बंदरगाह नार्विक पर अधिकार करने के लिए चल पड़े। पहले तो अंग्रेज़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कुछ सफलता मिली, परन्तु नौ-सेना और स्थल-सेना में ठीक समन्वय न होने के कारण वे जर्मनों का विरोध नहीं कर सके।

उत्तरी नार्वे में अभी युद्ध चल ही रहा था कि हिटलर ने हॉलैंड, बेल्जियम और लग्ज़मबर्ग के मार्ग से फ्रांस पर आक्रमण कर दिया।

इससे नॉर्वे से सेना वापस बुला ली गई। अंग्रेज़ इस युद्ध में केवल एक काम कर सके कि नॉर्वे के राजा हाकुन (Haakon) को बचा कर इंग्लैण्ड ले गये।

: ७ :

फ्रांस विजय

ठीक वैसे ही, जैसे डेन्मार्क और नॉर्वे की सरकारों को जर्मनी की सुरक्षा का नोटिस दिया गया था, बेल्जियम और हॉलैंड की सरकारों को भी १० मई १९४० को प्रातःकाल नोटिस दे दिया गया।

जब जर्मनी का दूत यह नोटिस लेकर बेल्जियम के विदेश-मंत्री के पास पहुँचा तो उस समय ब्रसल्ज़ के हवाई अड्डे पर ज़र्मन हवाई जहाज़ों के बम फटने का शब्द हो रहा था। जब जर्मन दूत ने वह नोटिस निकाला तो विदेशमंत्री ने नोटिस लेने से पहले ही क्रोध में कह दिया, "जर्मनी ने अभी-अभी हमारे देश पर आक्रमण कर दिया है। इन पच्चीस वर्षों में यह दूसरा अवसर है, जब जर्मनी ने एक बेकसूर, निष्पक्ष और वफादार देश पर निर्ममतापूर्वक आक्रमण किया है। यह सन् १९१४ के आक्रमण से भी अधिक घृणित कार्य है। कोई सूचना, अन्तिम चेतावनी दिये बिना अथवा कोई कसूर बताये बिना यह हुआ है। इस आक्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण से ही बेल्जियम को यह पता चला है कि क्या हो रहा है। जर्मनी ने अपने सब वचन और आश्वासन तोड़ डाले हैं। इतिहास में जर्मन रीख को इस बात का उत्तरदायी माना जावेगा। बेल्जियम अपनी रक्षा करेगा।"

जर्मन दूत जब अपना नोटिस पढ़ने लगा तो बेल्जियम के विदेशमंत्री स्पैक ने कहा, "कष्ट करने की ज़रूरत नहीं। यह मुझे दे दो और जाओ।"

पहले १८३९ में यूरोप के पाँच महान् देशों ने बेल्जियम और हॉलैण्ड की स्वतन्त्रता का सम्मान करने का आश्वासन दिया था। फिर १९१९ में जर्मन गणतन्त्र नें आश्वासन दिया था। अन्त में ३० जनवरी १९३७ में हिटलर ने पुनः आश्वासन दिया था।

बेल्जियम को हिटलर के विचारों का ज्ञान पहले से ही था। परन्तु वे अपने देश की शक्ति जर्मनी के विरोध में दुर्बल देख धैर्य से अपनी मुसीबत की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे ब्रिटेन और फ्रांस की सुरक्षा की माँग इस कारण नहीं कर सके कि वे इसको व्यर्थ समझते थे और साथ ही वे इतिहास में स्वयं को निष्पक्ष सिद्ध करने के लिए अपना बलिदान देने को तैयार थे।

बेल्जियम पर आक्रमण का समाचार पाते ही फ्रांस और ब्रिटेन की सेनाएँ बेल्जियम में पश्चिम की ओर से घुस आईं। परन्तु जर्मनी की सेनाएँ बहुत तीव्र गति से और भारी यन्त्रों, टैंकों इत्यादि के साथ आई थीं।

१५ मई तक फ्रांस और ब्रिटेन की सेनाएँ पीछे हटने लगी थीं। फांस की सेनाएँ तो भाग खड़ी हुई और ब्रिटेन की सेना डनकिर्क के समुद्र तट की तरफ हटने लगीं।

हॉलैण्ड पाँच दिन में ही समाप्त हो गया था। बेल्जियम तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे भी पूर्व मित्रराष्ट्र की सेनाओं से रिक्त कर दिया गया था। १६ मई को चर्चिल, जो अब चैम्बरलैन के स्थान ब्रिटेन का

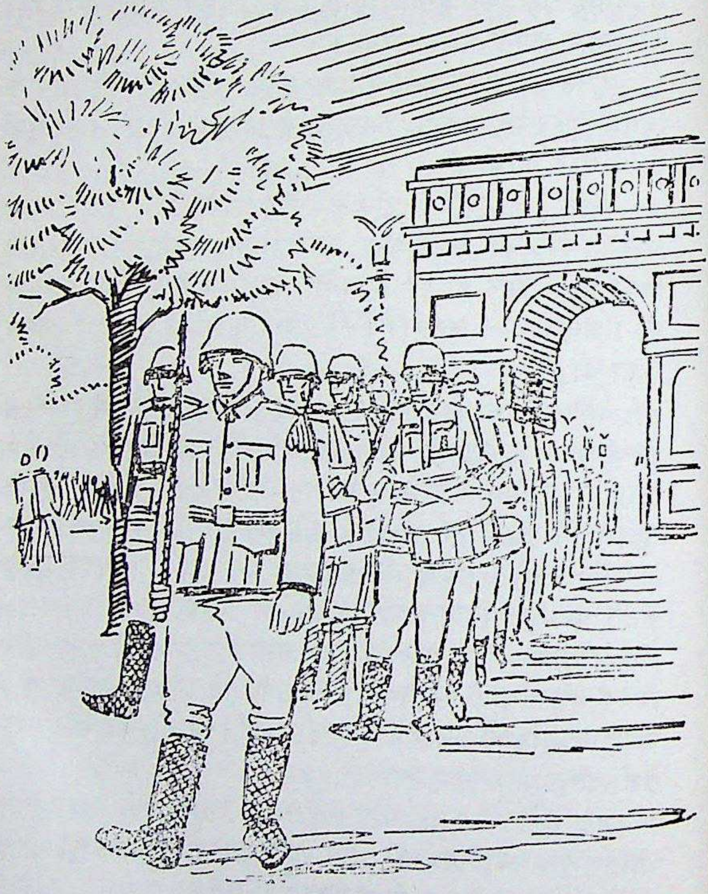

१४ जून, १९४० को जर्मन सेना पेरिस (फ्रांस) में प्रविष्ट हो गई। विजय-द्वार (Arc de Triomphe) से जर्मन सेना कतायद करती हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 168024

प्रधानमंत्री था, वहाँ की दुर्दशा अपनी आँखों से देखने के लिए गया। इस आक्रमण में बेल्जियम की सेना तो एक दिन भी ठहर नहीं सकी। ब्रिटिश सेना के दाहिनी ओर फ्राँसीसी सेना थी। वह भी जर्मन दबाव के सामने टिक नहीं सकी। उत्तर में ब्रिटेन की सेना घेरे में आने लगी तो इसको भी वापस होना पड़ा। इस पर भी १७ मई तक विरोध होता रहा। १८ मई को फ्रांसीसी सेना की रेखा टूट गई।

यह कहा जाता है कि फ्रांसीसी सेना में बहुत बड़ी संख्या में कम्युनिस्ट घुसे हुए थे और १८ तारीख को उन्होंने यह सूचना फैला दी कि ब्रिटेन की सेना जो सूडान के उत्तर में थी, पीछे हटने लगी है। यह बात मिथ्या थी, परन्तु इसका प्रभाव हुआ। फ्रांसीसी सेना भाग खड़ी हुई।

इससे तो अंग्रेज़ी सेना को भी पीछे हटाना पड़ा और यह डेन्मार्क के रेतीले किनारों के ओर हटने लगी।

ब्रिटेन के लिए यह आवश्यक हो गया कि जितना सम्भव हो, अपनी सेना को बचाने का यत्न करे। यह यत्न २६ मई १९४० से आरम्भ हुआ। सरकार ने लोगों से सहायता माँगी तो इंग्लैण्ड के दक्षिणी समुद्र तट पर की पूर्ण जनता सहायता के लिए आ उपस्थित हुई। जिस किसी के पास भी किसी प्रकार की किश्ती, इंजिन वाली अथवा बादबानों से चलने वाली थी, सब लेकर आ गये और सैनिकों को फ्रांसीसी किनारे से लाने के लिए चल पड़े। २७ को रात को ही छोटे-छोटे जहाज़ों और नौकाओं का ज्वार-सा पहले इंग्लैण्ड के चैनल के बंदरगाहों की ओर, फिर डेनकर्क के रेतीले किनारों की ओर चलने लगा और २८ तारीख से वहाँ सैनिकों को भर-भर कर इस पार लाने लगे। इस सब समय जर्मन हवाई जहाज़ इन पर बम वर्षा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे।

इस सैनिक लाने की मुहिम में भाग लेने वाले जहाज़ों,

'वी (V) फौर विक्टरी' का समाघोष देकर अंग्रेजों का मनोबल ऊँचा करने वाले इंग्लैंड के प्रधान मंत्री विन्स्टन चर्चिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किश्तियों, स्टीमरों और बादवान वाली किश्तियों का विस्तृत ब्यौरा प्राप्य है।

कुल ८६१ यानों ने भाग लिया, जिनमें से २४३ डूब गए। इन्होंने २७ मई को ७,६६९ सिपाही बचाये। २८ मई को १७,८०४ सिपाही, २९ मई को ४७,३१० सिपाही, ३० मई को ५३,४३२ सिपाही और ३१ मई को ६८,००० सिपाही बचाये गये।

कुल ३,३८,२३६ सैनिक बचाये जा सके। इनमें पर्याप्त संख्या में फ्रांसीसी भी थे। इस बचाव में इंग्लैण्ड के हवाई बेड़े ने बहुत साहस से काम लिया। जब तक सिपाही निकाले जाते रहे, जर्मनी के हवाई जहाज़ों से आकाश में युद्ध होता रहा।

इसके बाद फ्रांस कुछ ही दिनों में विजय हो गया और पैरिस में जर्मनी की पिट्ठू सरकार पीटां के अधीन बनाई गई। पीटां सरकार से हिटलर की सन्धि में एक शर्त यह थी कि सब समुद्री जहाज़ बेकार कर बन्दरगाहों में बन्द कर दिये जावेंगे। इस पर 'डीगाल' ने फ्रांस की एक स्वतन्त्र सरकार फ्रांस के बाहर बना दी और जहाज़ों के कप्तानों को हुक्म दे दिया कि सब मोराको के बन्दरगाहों में एकत्रित हो जावें। बहुत-से जहाज़ों के कप्तानों ने डीगाल की आज्ञा मान ली और वे फ्रांस की स्वतन्त्र सरकार के अधीन काम करने लगे।

: ८ :

हवाई आक्रमण

डन्किर्क से सैनिक निकालने के बाद इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री

—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्चिल ने अपने दृढ़ संकल्प प्रकट करने वाला व्याख्यान पार्लियामेंट में दिया। उसने कहा, "प्रथम मोर्चे पर हम हार रहे हैं। परन्तु हमें अपनी शक्ति और अपने पक्ष के न्याय पर विश्वास है और हम तब तक लड़ते रहेंगे, जब तक आततायी शत्रु को पराजित नहीं कर लेते। हम अकेले ही लड़ेंगे।"

फ्रांस पर हिटलर की विजय को देखकर मुसोलिनी जर्मनी के साथ युद्ध में सम्मिलित हो गया और फ्रांस के वहुत-से क्षेत्र पर अधिकार जमा बैठा।

हिटलर की फ्रांस पर विजय होने पर रूस ने भी बाल्टिक-सी के देशों को आत्मसात् कर लिया।

हिटलर का विचार था कि इंग्लैण्ड अब मैत्री कर लेगा और उसने कई ढंग से इस विषय पर ब्रिटेन की सम्मति जानने का यत्न भी किया। परन्तु चर्चिल के बार-बार घोषणा करने पर कि इंग्लैण्ड अकेला ही लड़ेगा, उसने इंग्लैण्ड पर आक्रमण करने की योजना बनाई। इस योजना में प्रथम चरण हवाई जहाज़ों से आक्रमण करना था।

अमरीका के प्रधान रूज़वेल्ट ने फ्रांस की पराजय पर निम्न वक्तव्य दिया—"मैंने पहले ही कह रखा है, चर्चिल से भी कहा है कि अमरीका मित्र राष्ट्रों को सैनिक-सामग्री देने के लिए वह सब-कुछ करेगा, जो उसकी शक्ति में होगा..."

फ्रांस की विजय पूर्ण हो गई थी। हिटलर एक मास से अधिक तक इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि ब्रिटेन मैत्री के लिए हाथ बढ़ायेगा। परन्तु जब यह नहीं हुआ तो हवाई आक्रमण आरम्भ कर दिया गया। समुद्री आक्रमण की योजना तो बनी, परन्तु उस पर कार्य नहीं हो सका।

जर्मनी ने फ्रांस, बेल्जियम तथा हॉलैंड के हवाई अड्डों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२,६६६ हवाई जहाज़ इकट्ठे कर लिये थे। इनमें १,०१५ बमबाज़ थे। ३४६ डुबकी मारकर बम फेंकने वाले, ६६३ लड़ाकू और शेष भारी लड़ाकू थे।

सैकड़ों की संख्या में हवाई जहाज़ नित्य इंग्लैंड के औद्योगिक क्षेत्रों पर, लंदन पर और बन्दरगाहों पर आ-आकर बम बरसाने लगे। इनके मुकाबले पर इंग्लैण्ड के लड़ाकू हवाई जहाज़ भी आकाश में जा पहुँचते थे और फिर आकाश में द्वन्द्व होते थे।

इन हवाई जहाज़ों का सबसे बड़ा आक्रमण १५ सितम्बर को हुआ। यह लन्दन पर किया गया था। इसमें लगभग ५०० जर्मन बमबाज़ों ने एकदम भाग लिया था। ब्रिटेन के हवाई लड़ाकू उनका मुकाबला करते रहे। इस युद्ध में, जो कई घन्टों तक चलता रहा, जर्मनी के अपने कथन के अनुसार ५६ बमबाज़ लन्दन में गिरा लिये गए थे। ब्रिटेन की बहुत कम हानि हुई थी।

हवाई आक्रमण के समय सब लोग अपने मकानों के तहखानों में चले जाते थे। ऊपर तबाही मचती रहती थी। जब रक्षा करने वाले लड़ाकू जहाज़ उनको भगा देते थे तो सायरन बजता था और लोग अपने-अपने काम में लग जाते थे।

रात के समय आक्रमणों में अधिक हानि होती थी। इस पर भी लोग सह रहे थे। पहले खतरे के सायरन पर लोग सचेत हो जाते थे। दूसरे पर लोग तहखानों में चले जाते थे और तीसरे पर बाहर आ पुनः काम-काज में लग जाते थे। दिन के बाद दिन और महीने के बाद महीने यह विनाश-लीला होती रही।

लन्दन पर निरंतर ५७ दिन-रात यह बमबारी होती रही। औसतन २०० बमबाज़ नित्य इस बमबारी में भाग लेते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरन्तर ५७ दिन तक दिन-रात लन्दन पर जर्मनी हवाई जहाज़ बमबारी करते रहे, परन्तु अंग्रेजों का मनोबल न गिरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लन्दन में रहने वाले लोगों का यह विचार था कि लन्दन तो ईंट-चूने का ढेर रह जावेगा। इंग्लैंड के दूसरे नगरों पर भी जर्मन हवाई सेना का प्रभाव हुआ। कवेन्टरी में तो और भी अधिक विनाश हुआ। इस पर भी इंग्लैण्ड में रहने वालों का मानसिक बल क्षीण नहीं हुआ। उनका नैतिक बल बना रहा।

सैकड़ों की संख्या में हवाई जहाज़ चील और कौओं की डारों की भाँति फ्रांसीसी किनारे से उड़ते थे। राडार यन्त्र से तुरन्त इंग्लैंड में पता चल जाता था और अंग्रेज़ी लड़ाकू स्पिट-फायर जहाज़ उनको रोकने के लिए तुरन्त आकाश में आ जाते थे। और प्रायः इंगलिश-चैनल के ऊपर ही युद्ध हो जाता। बहुत से वहीं गिरा दिये जाते। फिर इंग्लैण्ड के किनारे पर ऐन्टी-एयर क्राफ्ट गन लगी होती थीं। वह भी कइयों को गिरा देती थीं, अन्यथा जर्मन जहाज़ों को हानि पहुँचा कर उन्हें वापस होने पर विवश कर देती थीं। इस पर भी कई इन रक्षा-पंक्तियों को पार कर जाते और फिर नगरों, कारखानों और सैनिक महत्ता के स्थानों पर युद्ध होता।

ब्रिटेन यह मुकाबला कर सका केवल अपने हवाई जहाज़ों के कारखानों के भरोसे पर। यद्यपि जर्मन आक्रमण इन कार-खानों पर भी होता था। इस पर भी ये कारखाने सन् १९४० में ४,०७० हवाई जहाज़ बनाकर आकाश पर उड़ा सके थे।

इस सब कुछ करने पर भी समुद्र द्वारा इंग्लैंड पर आक्रमण सम्पन्न नहीं हो सका। सितम्बर के हवाई हमलों के बाद भी इंग्लैण्ड की जनता में न तो निराशा उत्पन्न हुई और न ही उनमें भगदड़ मची। तब हिटलर ने सीधे आक्रमण का विचार छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: १ :

जर्मनी ने पश्चिम की ओर अपना मार्ग अवरुद्ध देखा तो बहुत परेशानी अनुभव करने लगा। उसका क्रोध पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया और हॉलैंड तथा डेन्मार्क के यहूदियों पर निकलना आरम्भ हो गया। लाखों की संख्या में निर्दोष यहूदी, स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध पकड़े जाने लगे और उनको मौत के घाट उतारा जाने लगा।

इंग्लैंड यह समझता था कि केवल इग्लैंड की रक्षा करने से युद्ध नहीं जीता जा सकता। इंग्लैण्ड को एक दूसरा मोर्चा खोलना चाहिए, जिससे जर्मनी में घुसने का मार्ग मिल सके।

इसके दो उपाय विचार किये गए। एक तो हिटलर के साथी मुसोलिनी के देश में घुसने का मार्ग ढूंढा गया। इटली का साम्राज्य मैडिटेरेनियन को पार कर ट्युनीशिया, ट्रिपोली और ऐबिसीनिया तक फैल गया था। इंग्लैंड को यह स्थान सबसे दुर्बल क्षेत्र समझ आया। अतः हिन्दुस्तान, आस्ट्रिया, कनाडा और न्यूजीलैण्ड के प्रयत्न से मिस्र में सेना का भारी जमाव किया गया और वहाँ से सिरेनायक, ट्रिपोली और ट्यूनीशिया पर अधिकार करने की योजना बनाई गई। ट्युनीशिया से सिसिली और फिर इटली पर आक्रमण करने का विचार था।

यह एक लम्बा मार्ग था, परन्तु फ्रांस में उतर कर जर्मनी तक पहुँचने से सुगम था। इसके लिए यत्न होने लगा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९४० में जनरल वेवल के अधीन सिरेनायक में इटली की सेना पर आक्रमण किया गया। सफलता नहीं मिली। इस पर भी यह विचार छोड़ा नहीं गया और मिस्र में अधिकाधिक सेना, टैंक, हवाई जहाज भेजे जाने लगे। मैडिटेरेनियन-सी का समुद्री बेड़ा भी सुदृढ़ किया जाने लगा।

दूसरा उपाय था जर्मनी पर हवाई बमबाज़ी की जाय। जब नवम्बर में जर्मनी का हवाई दवाव इंग्लैण्ड पर कम हुआ तो अंग्रेज़ बमबाज़ उड़-उड़कर राइनलैण्ड और जर्मनी के अन्य ओद्यौगिक केन्द्रों पर बम बरसाने लगे।

दोनों आक्रमण के कार्य सन् १९४० के समाप्त होने से पहले ही आरम्भ हो गये थे और इनके आरम्भ होने से युद्ध का वेग जर्मनी के विपरीत होने लगा था।

ये दोनों मार्ग अन्तिम विजय की ओर होते हुए भी बहुत लम्बे थे। परन्तु भाग्य एक तीसरा मार्ग खोल रहा था। जब जर्मनी इंग्लैंड पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था, रूस जर्मन की व्यस्तता देखकर अपने पाँव पसारने लगा था।

१४ जून १९४० को जब जर्मनी की सेना पैरिस में दाखिल हुई थी, उसी दिन स्टालिन ने लिथूनिया, लेटविया और इस्टोनिया के राज्यों को रूस के अधीन हो जाने को कह दिया। उसने वहाँ अपनी सेनाएँ भेज नई सरकारें बनवाईं और उनसे रूस को वहाँ राज्य हस्तगत करने का निमन्त्रण प्राप्त कर लिया।

स्टालिन की भूख इतने से तृप्त नहीं हुई। रुमानिया के भ दो क्षेत्रों पर उसने बलपूर्वक अधिकार कर लिया।

हिटलर को रूस का बाल्टिक राज्यों पर अधिकार पसन्द नहीं था। अक्तूबर १९४० तक हिटलर को यह समझ आ गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इंग्लैंड पर सेना उतारी नहीं जा सकती। इस समय इसने अपना ध्यान पूर्व की ओर किया। यह उसका स्वप्न था कि जर्मनी को पूर्व की ओर बढ़ना चाहिए। फ्रांस और इंग्लैंड पर आक्रमण तो इस कारण था कि वह अपनी पीठ सुरक्षित रखना चाहता था। इसमें वह सफल हो गया था। फ्रांस जर्मनी के अधिकार में हो चुका था और इंग्लैड को दुर्बल किया जा चुका था।

हिटलर ने १९४० के अन्त में ही रूस पर आक्रमण का निर्णय कर लिया और अपनी सेनाएँ, सैनिक सामान और हवाई जहाज़ रूस की सीमा पर एकत्रित करने आरम्भ कर दिए।

उसका विचार था कि रूस को युद्ध में पराजित कर अथवा दुर्बल कर वह जापान को अमरीका के विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार कर सकेगा।

: २ :

नवम्बर १२, १९४० को हिटलर ने यह गुप्त आज्ञा दे दी—"अभी रूस से राजनीतिक उलझनों को समझने-समझाने के लिये बातचीत होने वाली है। इस वार्त्तालाप का परिणाम कुछ भी हो, पूर्व की ओर बढ़ने की योजना पर काम जारी रहेगा। समय-समय पर इस विषय पर आज्ञाएँ निकलती रहेंगी। आक्रमण की व्याख्या सहित योजना घोषित होती रहेगी।"

इसी दिन मोलोटोव बर्लिन में हिटलर तथा रिबनट्रौप से बातचीत के लिये आया हुआ था। हिटलर रूस को रूमानिया के दो प्रांत बैसरेबिया और बुकोविना लेने से रोक नहीं सका था। रूमानिया जर्मनी के लिये एक अति महत्त्व का स्थान था। वहाँ के तैल से जर्मनी का युद्ध चल रहा था। इस कारण हिटलर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूस को यहाँ से दूर रखना चाहता था।

हिटलर ने रूमानिया को आश्वासन दे दिया कि जर्मनी उसकी रक्षा करेगा। यह आश्वासन रूस को पसन्द नहीं आया। वास्तव में दोनों देश एक-दूसरे को धोखा देने का यत्न करने लगे थे। जर्मनी ने फिनलैण्ड में सेना भेजी थी रूस पर आक्रमण के लिए परन्तु रूस से कहा था कि नॉरवे की सेना को सुदृढ़ करने के लिए भेजी है। रूमानिया की सुरक्षा के आश्वासन के लिए उसने यह बहाना लगाया कि अंग्रेज़ उस पर अधिकार करने वाले हैं।

रूस जर्मनी की गतिविधि को संदेह से देखने लगा था। जर्मनी, इटली और जापान में एक समझौता हुआ था। यद्यपि यह कहा गया था कि समझौता अमरीका के विरुद्ध है, परन्तु रूस जानता था कि उसको योरोप और एशिया के बँटवारे से बाहर रखा गया है।

१२ नवम्बर को हिटलर की मोलोटोव से वार्तालाप का प्रयोजन रिबनट्रौप के वक्तव्य से स्पष्ट हो जाता है। यह वक्तव्य रिबनट्रौप ने मोलोटोव के सम्मुख दिया था। रिबनट्रौप ने कहा था—

"इंग्लैण्ड पराजित हो चुका है। देखना केवल यह है कि वह कब अपनी पराजय स्वीकार करता है।...ब्रिटिश साम्राज्य के अन्त का आरम्भ हो गया है। यह सत्य है कि ब्रिटिश सरकार अमरीका से सहायता की आशा कर रही है। परन्तु जर्मनी के लिये अमरीका का युद्ध में सम्मिलित होने का कुछ भी अर्थ नहीं। अब जर्मनी और इटली किसी भी ऐंग्लो-सैक्सन को योरोप की भूमि पर पाँव रखने नहीं देंगे। यह कोई सैनिक समस्या नहीं। इस कारण हम यह विचार नहीं कर रहे कि युद्ध कैसे जीता जायेगा। विचारणीय विषय है कि यह जीता हुआ युद्ध कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दी समाप्त होगा।...इस कारण अब समय आ गया है कि हम विचार करें कि जर्मनी, इटली, जापान और रूस भूमंडल के किस क्षेत्र पर अपना सुदृढ़ हाथ रखें।"

इस प्रकार दो दिन तक बातचीत होती रही। यह कहा जाता है कि रूसी विदेशमन्त्री गम्भीर भाव बनाये बैठा रहा। वह बहुत कम बोला और जर्मनी के नेताओं की बातें नोट करके ले गया। हिटलर भी मोलोटोव के व्यवहार से सन्तुष्ट नहीं था।

इस वार्तालाप के बाद १८ दिसम्बर १९४० को सेना के नाम एक गुप्त आज्ञा निकली। उसमें लिखा था—

"जर्मनी की सशस्त्र सेना को सोवियत रूस को कुचलनें के लिए अति अल्प काल में तैयार रहना चाहिये। यह इंग्लैण्ड को समाप्त करने से पहले ही होना चाहिये। सेना को अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना होगा।

"इसकी तैयारी १५ मई १९४१ से पूर्व हो जानी चाहिये।"

हिटलर की विजय और इंग्लैण्ड की दुर्बल स्थिति देखकर स्पेन के फ्रांको के मुख में भी लार टपकने लगी थी। इसने अंग्रेज़ों से जिबराल्टर छीनने की योजना बना हिटलर से सहायता माँगी। हिटलर जिबराल्टर स्पेन को देने को तैयार नहीं हुआ। बात-चीत हुई, परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला।

हिटलर का पूर्ण ध्यान अब रूस की ओर था और २२ जून १९४१ को जर्मन सेनाओं ने रूस की सीमा पार कर आक्रमण आरम्भ कर दिया।

जर्मन सेनायें तीव्र गति से बढ़ीं। तीन सप्ताह में ही फील्ड-मार्शल बौक स्मोलैन्स्क तक बढ़ गया। यह पोलैण्ड की सीमा से ४५० मील था और मास्को से केवल दो सौ मील के अन्तर पर था।

उत्तर में फील्ड-मार्शल फोन लीवस फिनलैण्ड से चलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेनिनग्राड के समीप पहुँच गया था। दक्षिण में फील्ड मार्शल फौन सैन्डहर्स्ट नीपर की ओर तथा युक्रेन की राजधानी कीव के समीप जा पहुँचा था।

बाल्टिक से ब्लैक-सी तक १,००० मील के मोर्चे पर जर्मन एक समान आशातीत बढ़े थे।

१४ जुलाई को हिटलर रूस के पराजित होने पर विश्वास कर रूस की तबाही की योजनायें बनाने लगा। हिटलर नें घोषणा की थी कि रूस के दो बड़े नगर लेनिनग्राड और मास्को को सर्वथा तबाह कर भूमि के समतल कर देना चाहिये। जर्मनी को इन नगरों के सुरक्षित मिलने पर भी नहीं लेना चाहिये। इनको तो सर्वथा नष्ट ही कर देना है। इनके नामो-निशान भी नहीं रहने चाहियें। इनके नागरिकों को भी जीवित छोड़नें का कोई कारण नहीं।

इस समय प्रश्न यह उपस्थित हो गया था कि मास्को पर अधिकार कर लेना चाहिये अथवा लेनिनग्राड या दक्षिण में युक्रेन पर अधिकार कर लेना चाहिये। इस विषय पर हिटलर और सेना के जनरलों में मतभेद हो गया। हिटलर मास्को पर अधिकार को इतना महत्व नहीं देता था जितना युक्रेन के अन्न उत्पन्न करने वाले खेतों और ब्लैक-सी के किनारे पर तेल को देता था।

अक्तूबर २० तक जर्मन मास्को से ४० मील के अन्तर पर रह गये थे। इस समय वर्षा आरम्भ हो गई और सेना की प्रगति धीमी पड़ गई। मध्य और उत्तर में शीत बढ़ रही थी और दक्षिण में वर्षा से कीचड़। सेना का बढ़ना रुक-सा गया था।

इसके साथ ही रूसी सेना पर युद्ध का प्रथम प्रभाव भी मिट गया था और वे डटकर मुकाबला करने लगे थे। जाड़ा, बर्फ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मन सेना की थकावट और विशाल हानि और रूसियों का डटकर मुकाबला—सब बातें जर्मनी के विपरीत सिद्ध हो गईं। पूर्ण मोर्चे पर जर्मन सेना की प्रगति रुक गई और कहीं-कहीं जर्मन घेरे में आ गए अथवा पीछे धकेले जाने लगे।

इससे हिटलर की निराशा बढ़ गई और उसको बहुत क्रोध आया। उसने सेना का सर्वोच्च अधिकार अपने हाथ में ले लिया।

: ३ :

रूस पर आक्रमण होते ही ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल ने रूस को सहायता देने का प्रस्ताव कर दिया। यह सहायता हिन्दुस्तान से ईराक के मार्ग से भेजी जाने लगी थी। टैंक, तोपें, गोला-बारूद और हवाई जहाज़। अमीरका से भी सामान इसी मार्ग से जाने लगा। इसके अनन्तर रूस अंग्रेज़ों के पक्ष में हो गया और मित्र राष्ट्रों के साथ सम्मिलित हो गया।

जब जर्मनी पूर्वी मोर्चे पर लड़ाई लड़ रहा था, समुद्र में उसकी पनडुब्बियाँ इंग्लैण्ड को आने-जाने वाले जहाज़ों को डुबोने लगी थीं। हिटलर की योजना यह थी कि रूस को सैनिक-शक्ति से विनष्ट किया जाय और इंग्लैंड को, सामान पहुँचाने वाले जहाज़ों को पनडुब्बियों से डुबो-डुबो कर भूखों मार दिया जाय।

सैकड़ों जहाज़ डुबोये गये। इन जहाज़ों में मित्रराष्ट्रों के जहाज़ तो थे ही, साथ ही उन निष्पक्ष राष्ट्रों के भी थे, जो इंग्लैंड और मित्रराष्ट्रों को सामान भेज रहे थे।

जून १९४० से ३१ दिसम्बर १९४० तक जो जहाज़ डुबोये गये, उनका भार ३२,३९,१९० टन था। यह विनाश-लीला १९४१ में और भी अधिक उग्रता से चलती गई। १९४१ में डूबनें वालों का भार ५० लाख टन से ऊपर था और १९४२ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भार ७७ लाख टन से ऊपर हो गया।

इस पर भी जहाज़ चलते रहे और युद्ध-सामग्री एवं खाने-पहनने का सामान इंग्लैंड पहुँचता रहा।

इतना विनाश होनें पर भी इंग्लैंड और उसके उपनिवेश तथा हिन्दुस्तान युद्ध जीतने का भरसक यत्न करते रहे। १९४२ की गर्मी की ऋतु में जर्मनी ने पुनः रूस को विजय करने का यत्न आरम्भ कर दिया। उत्तर और मध्य मोर्चे पर तो कुछ अधिक प्रगति नहीं हुई, परन्तु दक्षिण मोर्चे पर जर्मनी की सेनाएँ स्टालिनग्राड तक पहुँच गई थीं।

इस समय एक अन्य घटना हुई। जापान ने हिटलर की इच्छा के अनुसार रूस पर आक्रमण करने से इनकार कर दिया। वास्तव में जापान और रूस की पृथक् सन्धि हो चुकी थी। साथ ही जापान को रूस से युद्ध करने पर कुछ लाभ दिखाई नहीं देता था। हिटलर की गिनती में यह कमी रही। यदि जापान रूस पर आक्रमण कर देता तो कदाचित् रूस जर्मनी और जापान की शक्ति का विरोध न कर सकता।

जापान को लाभ प्रतीत हो रहा था अमरीका पर आक्रमण करने से। जापान को लाभ दिखाई दिया फिलिपाइन्ज़, मलाया, इंडोनीशिया इत्यादि देशों पर आक्रमण करने में। हिटलर इस बात से डरता था। उसका विचार था कि यदि जापान ने प्रशान्त और हिन्द सागर के इन द्वीपों पर आक्रमण किया तो अमरीका ब्रिटेन की तरफ से युद्ध में सम्मिलित हो जावेगा।

जैसे हिटलर स्पेन के फ्रेंको को ब्रिटेन के विरुद्ध नहीं कर सका, वैसे ही वह जापान को रूस के विरुद्ध नहीं कर सका था। इन असफलताओं के कारण जर्मनी युद्ध जीत नहीं सका।

परन्तु युद्ध हारने की सम्भावना तो तब बनी, जब जापान को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ दिसम्बर १९४२ को जापानी हवावाजों तथा पनडुब्बियों ने एकाएक पर्ल-हार्बर पर आक्रमण करके युद्ध में प्रवेश कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी ने यह आश्वासन दिया कि यदि जापान और अमरीका में युद्ध हुआ तो जर्मनी भी अमरीका के विपरीत युद्ध की घोषणा कर देगा। यह सन्धि २५ नवम्बर, १९४२ को हुई और यद्यपि यह आश्वासन लिखित में नहीं था तो भी जापान ने इसको मान लिया और दिसम्बर ७ को प्रातः ७-२५ पर जापान ने पर्ल-हार्बर पर आक्रमण कर दिया।

प्रशान्त महासागर में एक द्वीप पर्ल-हार्बर पर अमरीका की जंगी नौ सेना की छावनी थी। जापानी हवाई जहाज़ ले जाने वाले समुद्री जहाज़ और जंगी समुद्री जहाज़ों ने एकाएक बिना सूचना के आक्रमण कर दिया।

११ दिसम्बर १९४१ को जर्मनी ने अमरीका संयुक्त राज्य के विपरीत युद्ध की घोषणा कर दी।

: ४ :

जापान को आरम्भ में सफलतायें मिलीं। इंडोनीशिया, मलाया, इंडोचायना, बोर्नियो तो पहले ही हमले में जापान के अधिकार में आ गये। तदनन्तर एक ओर बर्मा और दूसरी ओर फिलिपाइन द्वीपों पर आक्रमण आरम्भ हो गया। अमरीका, रूस और ब्रिटेन एक ओर हो गये। फ्रांस भी नाम से इनकी ओर था। ये मित्रराष्ट्र कहलाते थे। जापान, इटली और जर्मनी ये प्रति-पक्षी थे। इस प्रकार जर्मनी द्वारा आरम्भ किया हुआ युद्ध विश्वयुद्ध हो गया। इस पर भी जापान और रूस मित्र रहे। ये परस्पर लड़ नहीं रहे थे।

चर्चिल की योजना यह थी कि अफ्रीका के मरुस्थलों से इटली को भगाया जाए और फिर ट्युनीशिया से सिसिली और तदनन्तर रोम को अधिकार में कर लिया जाए। रोम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैकोस्लोवाकिया और वहाँ से हंगरी तथा पोलैण्ड पर अधिकार कर जर्मनी को घेर लिया जाय।

रूस यह नहीं चाहता था। इसके विपरीत वह इंग्लैंड और अमरीका द्वारा फ्रांस के किनारे पर सेनाएँ उतरवाना चाहता था। सन् १९४२ के आरम्भ में ही जर्मनी रूस के उत्तर और मध्य के दो मोर्चों पर पीछे हटने लगा था। इस पर भी रूस का विचार था कि यदि फ्रांस में दूसरा मोर्चा खोल दिया जावे तो रूस का काम सुगम हो जावेगा। स्टालिन नहीं चाहता था कि बालकान की ओर अंग्रेज़ और अमेरिका की सेनाएँ आएँ। उसकी दृष्टि रूमानिया, बलगारिया, चैकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड और युगोस्लाविया पर थी। वह इन देशों को अपने अधीन करना चाहता था।

स्टालिन, चर्चिल और रूज़वेल्ट में गोष्ठी तेहरान में हुई और इसमें ही रूस ने अफ्रीका के युद्ध में अपनी अरुचि प्रकट कर दी। इस पर भी चर्चिल का मत था कि इटली को पराजित करना आवश्यक और सुगम है। चर्चिल यह भी समझता था कि इससे रूस के पूर्वी योरुप के देशों को हड़प लेने की योजना का विरोध भी हो जाएगा।

रूज़वेल्ट पहले तो चर्चिल की योजना को पसन्द करता रहा और इसके लिये अमेरिका से सहायता भी दी गई। परन्तु पीछे उसने स्टालिन के प्रस्ताव पर ही बल देना आरम्भ कर दिया।

सन् १९४३ में रूस जर्मनी को पीछे धकेलने लगा। अंग्रेज़ी सेना, हिन्दुस्तानी, आस्ट्रेलियन और न्यूजीलैण्ड की सेनाओं की सहायता से अफ्रीका के उत्तरी मरुस्थल पर इटली की सेनाओं को धकेलते हुए ट्युनिस में ले गई। यह धकेलना आरम्भ हुआ ३१ अगस्त १९४२ से। ३१ अगस्त से ३ सितम्बर तक रोमल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अधीन जर्मन सेना आक्रमण करती रही। तीन सितम्बर से मित्रराष्ट्रों की सेनाएँ आक्रमण करने लगीं और रोमल रक्षा पर हो गया। नवम्बर २ को रोमल को पीछे हटना पड़ा। नवम्बर ५ को रोमल अल-अमीन से तुवरुक और फिर वहाँ से २० नवम्बर तक बैनगाजी तक हट गया। इस अवधि में उसे सात सौ मील पीछे हटना पड़ा।

इस समय अमरीका और ब्रिटेन की सेनाएँ मोराको में उतरीं और पूर्व की ओर चलने लगीं।

सन् १९४३ में अंग्रेज़ जनरल मौंटगुमरी ने, जिसने अफ्रीका से रोमल को भगाया था, सिसिली में अपनी सेनाएँ उतार दीं। मुसोलिनी कैद कर लिया गया और रोम में राज्य पलट गया। जर्मनी को अपनी और सेना इटली में भेजनी पड़ी। इस सबका प्रभाव रूस के मोर्चे पर हुआ। रूस जर्मनों को सब मोर्चों पर पीटने लगा। परन्तु स्टालिन की इच्छा यह बनी रही कि फ्रांस में मोर्चा खोला जाय। इसकी तैयारी भी की गई। सन् ४३ और कई मास ४४ के भी इसमें व्यय किये गए। अन्त में मई १९४४ में इस आक्रमण की तैयारी पूर्ण हुई।

यह निश्चय किया गया कि फ्रांस के नौरमंडी प्रांत में चिरबरी के समीप सेनाएँ उतारी जाएँ।

यदि स्टालिन रूज़वैल्ट को फ्रांस पर दूसरा मोर्चा खोलने के लिये राजी न करता और उससे आधी शक्ति भी इटली में लगायी जाती तो चर्चिल की योजना सफल हो जाती और कदाचित् पूर्वी योरुप कम्युनिज़्म के अधिकार से बच जाता। मित्रराष्ट्रों की सेनाएँ इटली के दक्षिण में उतरीं। रोम की स्वतन्त्र सरकार भागकर मित्रराष्ट्रों के पास आ गई और मित्रराष्ट्र जर्मन सेना को उत्तर की ओर धकेलने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इटली में केवल २८ डिविज़न सेना थी। परन्तु फ्रांस पर आक्रमण करने के लिये प्रथम २० दिन में ६,०२,००० आदमी १,८६,००० गाड़ियाँ जिनमें टैंक, शस्त्र सज्जित जीपें इत्यादि थीं, ले जायी जाने लगी थीं और आक्रमण के प्रथम ६० दिन में १७,०३,००० आदमी ३,६५,००० गाड़ियाँ जाने वाली थीं।

यह आक्रमण द्वितीय जर्मन युद्ध का सबसे महान् कार्य माना जाता है।

५ और ६ जून की मध्य रात्रि को १२-२० पर २०० स्वयं-सेवक सैनिक ६ ग्लाइडरों पर सवार हो इंग्लैंड से उड़कर फ्रांस में नौरमंडी के तट पर जा उतरे। इन दो सौ सिपाहियों को यह काम दिया गया था कि वे किनारे तक आने वाली सड़कों के पुलों पर अधिकार कर लें। ग्लाइडरों में ऐंजिन नहीं होते, इस कारण उड़ते समय उनकी आवाज़ नहीं होती।

इसके आधे घंटे बाद ग्लाइडरों में ही छतरीबाज़ों को उतारने का प्रबंध कर दिया गया। छतरीबाज़ों के दो ब्रिगेड उतारे गये। इनको पुलों पर और किनारों पर लगी तोपों पर छापे डाल कर अधिकार जमाने का काम दिया गया। पाँच ब्रिगेड औरनें की किलाबंदियों पर अधिकार करने के लिए आये थे। साथ ही नहर के पुलों पर अधिकार करना था।

तदनन्तर ३-३० बजे ७२ ग्लाइडरों में बंदूकें और कुछ भारी सामान उतारने के लिये प्रबंध कर दिया गया।

ये सब लोग दिन निकलने से पहले, इनको बताया काम करने वाले थे। इन सबको ग्लाइडरों में बैठाकर और हवाई जहाज़ों से ऊपर ले जाकर फ्रांस के किनारों की ओर धकेल दिया गया। आक्रमण की सफलता इन लोगों पर निर्भर थी। ६० पाइलटों को यह काम सौंपा गया था और इनमें छतरीबाज और दूसरे उतरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले लगभग सौ-सौ लोग थे। यह काम अत्यंत भय का था। इस कारण ये सब लोग स्वयं-सेवक सैनिक ही थे।

छतरीबाज़ सिपाहियों के पास कम से कम ८५ पौंड सामान होता था। इसमें हल्की बंदूकें, संकेत करने के लैंप थे, जिनसे पीछे आने वालों को उतरने का संकेत मिल सके। इनके पास स्थान के मानचित्र थे। जहाँ इनको उतरना था और फिर जिस स्थान पर उनको अधिकार जमाना था, यह मानचित्र में लिखा था। ७२ ग्लाइडरों में ४८ सही-सलामत उतरे। शेष अंधेरे के कारण नष्ट हो गये।

जब ग्लाइडरों में से एंटी टैंक गनें आईं तो उनको इन स्वयं-सेवकों ने मोर्चे पर लगा दिया। इस सब काम के लिए दो घंटे मिले और तदनन्तर हवाई जहाज़ों से बमबाज़ी आरम्भ हो गई।

इस सब कार्रवाई से शत्रु-क्षेत्र में हलचल तो मची, परन्तु आक्रमण की सब तैयारी इतनी चोरी-चोरी की गई थी कि शत्रु समझ नहीं सका कि यह बड़े आक्रमण की तैयारी का प्रथम चरण है। ऐसे छुट-पुट आक्रमण पहले भी कहीं-कहीं हुआ करते थे। इसके अतिरिक्त फ्रांस में कैले और डनकिर्क के समीप झूठे आक्रमण के प्रदर्शन किये जाते थे। शत्रु समझता रहा कि आक्रमण वहाँ होने वाला है। नौरमंडी जहाँ आक्रमण हुआ, डैनकिर्क से सैकड़ों मील पश्चिम की ओर था।

६२० छतरीबाज़ों में से २०० एकत्रित हो सके और वे निर्धारित स्थानों पर चल पड़े। इस समय तक शत्रु सचेत हो गया था और सामने से गोली चलने लगी थी। जान व माल की बहुत हानि हुई। इस पर भी इन छतरीबाज़ों ने ५ निश्चित पुलों में से चार तक पहुँच कर उनको बारूद से उड़ा दिया। इससे जर्मन सैनिकों और टैंकों के तट तक पहुँचने में कठिनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न कर दी।

पुलों पर एँटी-एयरगन्ज़ पर अधिकार करने में भारी संघर्ष हुआ। छतरीबाज़ और भारी सामान तरंगों की भाँति आता रहा और युद्ध आरम्भ हो गया। इस पर भी जर्मन सेना, जो इस क्षेत्र की रक्षा के लिये नियुक्त थी, यह नहीं समझ सकी कि यह किसी प्रकार का बड़ा आक्रमण है। वे इसे स्थानीय गड़बड़ ही समझते रहे।

रात के २-२० पर स्थानीय जर्मन कमाण्डर ने रौमेल के शिविर में सूचना भेजी कि दूर इंग्लैंड के किनारों पर हवाई जहाज़ों की गूंज सुनाई दे रही है। राडार पर भी उसके लक्षण दिखाई दिये हैं। यह तो सन्देह हुआ है कि विशेष हलचल है, परन्तु यह आक्रमण बड़े स्तर का है, ऐसा नहीं माना गया। जर्मन अधिकारी यह समझते रहे कि यह झूठा आक्रमण केवल धोखा देनें के लिए है। वास्तविक आक्रमण कैले एमीन के समीप होनें वाला है।

समुद्री जहाज़ों से आक्रमण के लिये तो जहाज़ मध्य रात्रि से पहले ही अपनें स्थानों से चल पड़े थे। पहले काफिले में एक हज़ार के लगभग छोटे-बड़े जहाज़ थे और उस पर तीस हज़ार जवान और ३,५०० गाड़ियाँ, हलके टैंक, जीप गाड़ियाँ और शस्त्र-सज्जित मोटर गाड़ियाँ थीं।

५-२० पर सर्वप्रथम ३०० हवाई बमबाज़ों से आक्रमण आरम्भ हुआ। इनके आक्रमण अर्थात् बम फैंककर जाने के तुरन्त ही पश्चात् दो बैटलशिप, दो क्रूज़र और एक दर्जन डिस्ट्रायर की तोपों ने किनारे पर गोलाबारी करनी आरम्भ कर दी। इस गोलाबारी की रक्षा में अमेरिका की एक डिविज़न सेना बिना किसी विशेष हानि के उतार दी गई। इस सेना के साथ हलके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टैंक, हलकी तोपें, मशीनगनें और जीपें इत्यादि उतारने में सफलता मिली। बड़े जहाज़ों से चपटे तले की किश्तियाँ उतरीं और उनसे सिपाहियों नें कंधों पर उठाकर समान भूमि पर उतारा। तटवर्ती शत्रु की सेना जब तोपों से इन पर गोलाबारी करने के लिए आई तो किनारे पर खड़े जंगी जहाज़ों की गोलाबारी से, उनको भून डाला गया।

वास्तव में जब तक शत्रु ने यह समझा कि फ्रांस पर आक्रमण आरम्भ हो गया है, तब तक दिन बहुत निकल आया था। जर्मन सेना जो तट की रक्षा के लिये वहाँ पर तैनात थी, वह तो मुकाबले पर डटी नहीं रह सकी। पीछे सैनिक मुख्यालय (Head-Quarter) को यह विश्वास कराने और फिर किनारे पर कुमक भेजने में दिन-भर लग गया। इसके साथ ही रौमेल के मुख्यालय तक आक्रमण का समाचार और उसके आकार-विस्तार का पता लगते-लगते ६ जून को मध्याह्नोत्तर चार बज गये। तब वहाँ से मुख्य सेना को टैंकों सहित तट पर भेजने का प्रबंध किया गया। तब तक मित्रराष्ट्रों की सेना उतर कर कई मील भीतर तक आ चुकी थीं।

मित्रराष्ट्रों की सेना के उतरने में जहाँ जर्मन सेनाओं का विरोध बाधक था, वहाँ समुद्र की अशान्त अवस्था और एक विशाल सेना तथा सैनिक-सामग्री को किनारे पर उतारने की कठिनाई थी।

७ जून से जर्मनी अपनी पूरी शक्ति से इस आक्रमण करनें वाली सेना को समुद्र में धकेल देने के लिये यत्न करने लगा और मित्रराष्ट्र फ्रांसीसी भूमि पर अपने पाँव जमाने में लग गये। ७ जून से १८ जून तक घमासान युद्ध चला। इस युद्ध सें ब्रिटिश और अमेरिका के हवाई जहाज़ों ने सफल भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जर्मनी का हवाई बेड़ा अंग्रेज़ी स्पिट फायर के मुकाबले में दुर्बल सिद्ध हुआ।

जर्मनी की पराजय निश्चित हो गई। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की सेनायें आइज़नहावर के अधीन लड़ रही थी और ब्रिटेन की फील्ड-मार्शल मौंटगुमरी के अधीन। नौरमण्डी के तट पर उटाह (Utah) और ओमाह (Omaha) वहाँ से बैयक्स (Bayax) इसगिने (Isignay) करैन्टन और तदनन्तर चिरबुर्ग (Cherbourg) यह सब जुलाई के प्रथम सप्ताह तक ले लिया गया। इस सबको लेने में अपार जन और सामान की हानि उठानी पड़ी। केवल केन पर तीन दिन में ३,८१७ सिपाही मारे गये। इस समय तक मित्रराष्ट्रों की सेना के पाँव फ्रांसीसी भूमि पर जम गये थे।

केन के वाद सेना के पुनर्गठन के लिये तीन दिन तक ठहर कर पैरिस की ओर धावा बोल दिया गया।

इस धावे की विशालता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि फ्रांस की भूमि पर मित्रराष्ट्रों की सेना के लिये रसद, पानी और दारू-बारूद प्रति दिन ५४,०० टन लाना पड़ता था जो ब्रिटेन तथा अमरीका के जहाज़ निरंतर ला रहे थे। अमरीकन टैकनीकी योग्यता से इतना सामान जहाज़ों से उतार कर सेना के मोर्चे पर पहुँचाया जा रहा था।

प्रथम सात सप्ताहों में १५,००,००० सिपाही फ्रांस के तट पर लाये गए। इस युद्ध में जर्मनी की २० डिविज़न सेना मोर्चे पर थी, परन्तु मित्रराष्ट्रों की समुद्र पार करने की कठिनाई होते हुए भी ३६ डिविज़न सेना मोर्चे पर आ गई थी।

२६ अगस्त को पेरिस पर अधिकार कर लिया गया। इस अधिकार से पूर्व ही पेरिस में पुलिस और नागरिकों ने पेरिस की पिट्ठू सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और वास्तव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रराष्ट्रों ने पेरिस इन विद्रोहियों से बिना लड़ाई के ही लिया था।

मित्रराष्ट्रों की फ्रांस के मोर्चे पर विजय ने रूस पर जर्मनी का दबाव बहुत कम कर दिया। इस विजय का एक परिणाम यह भी हुआ कि कुछ जर्मन सैनिक अधिकारी जो हिटलर के व्यवहार से असंतुष्ट थे, षड्यन्त्र कर हिटलर की हत्या करने पर उतारू हो गए।

जब से हिटलर ने जर्मनी का शासन हाथ में लिया था, छः बार हिटलर की हत्या का षड्यंत्र किया गया था। छहों बार वह षड्यंत्र विफल गया। एक बार तो हिटलर की कुर्सी के समीप ही बम फटा और हिटलर के कपड़ों के चिथड़े उड़ गये परन्तु स्वयं उसको कुछ भी हानि नहीं हुई। इससे हिटलर भाग्य को अब भी अपनी ओर ही समझता था। इस षड्यंत्र के बाद हिटलर नें उन सबको जिनपर उसे संदेह था, गोली से उड़वा दिया। रोमेल को विष देकर समाप्त कर दिया गया।

ज्यों-ज्यों हिटलर की पराजय होती जाती थी, वह अधिकाधिक मूढ़मति और अभिमानी होता जाता था। जब भी कोई उसको उसके मन के विपरीत सम्मति देता था, उसे वह अस्वीकार कर देता था।

जानकार क्षेत्रों में हिटलर की पराजय निश्चित समझी जानें लगी थी। परन्तु हिटलर न तो किसी प्रकार से किसी की राय मानने को तैयार होता था न ही कोई ऐसा काम करता था, जिससे मित्रराष्ट्रों के सामने हार मान युद्ध समाप्त हो सके।

हिटलर की पराजय न केवल शत्रुओं की संख्या बढ़ जाने से हुई, प्रत्युत युद्ध की सामग्री को पर्याप्त मात्रा में न बना सकनें के कारण भी हुई। ब्रिटेन के बमबाज़ जर्मनी के उद्योग केन्द्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आक्रमण कर रहे थे और फैक्टरियाँ विनष्ट हो रही थीं।

हिटलर की अंतिम आशा थी कि रूस की अमरीका और इंग्लैंड से सुलह नहीं रह सकती। वह रूस की मानसिक अवस्था को समझता था। इसमें वह ठीक अनुमान लगा रहा था। परन्तु वह ब्रिटेन और अमरीका की सहनशक्ति का अनुमान नहीं लगा सका। अतएव मालटा कांफरेन्स में रूस ने पूर्ण पूर्वी योरोप को और आधे से अधिक जर्मनी को अपने लिये माँग लिया। यह अमरीका और अंग्रेज़ों की दूरदर्शिता थी कि वह रूस की माँग से असन्तुष्ट होने पर भी मान गये और हिटलर की अंतिम आशा भी पूर्ण नहीं हुई।

इटली में भी और रूस के मोर्चे पर भी हिटलर की पराजय-पर-पराजय होती जा रही थी। परन्तु चर्चिल की योजना का रूज़वैल्ट विरोध करता रहा था। रूज़वैल्ट स्टालिन को नाराज़ नहीं करना चाहता था। बालकान के रूमानिया इत्यादि देश रूस की झोली में पड़ गये। और भी भूलें हुईं जिससे बर्लिन ब्रिटेन के हाथ में आने के स्थान रूस के हाथ में चला गया। यूनान भी जा रहा था, परन्तु चर्चिल समय पर वहाँ पहुँच गया। वहाँ उसने एक अस्थाई सरकार बना दी और वह बच गया। परन्तु चर्चिल चीन को नहीं बचा सका। यह रूस का प्रभाव-क्षेत्र मान लिया गया।

७ मई १९४५ को हिटलर की आत्महत्या के बाद बिना शर्त के जर्मनी मित्रराष्ट्रों की सेनाओं के अधीन हो गया।

इटली तो पहले ही पराजित हो चुका था। परन्तु जापान को पराजित करने में एक मास और लगा। जून मास में दो एटम बमों द्वारा जापान के औद्योगिक नगरों के तबाह हो जाने से जापान ने हथियार डाल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों में कुछ एक बातें यह हैं—

१. यदि दुनियाँ के भले लोगों को जीवित रहना है तो उनको शक्ति संचय करनी चाहिये। दुष्ट लोग युक्ति और न्याय का मूल्य नहीं समझते।

२. दुनियाँ के भले लोगों को परस्पर सहयोग के मार्ग ढूंढते रहना चाहिये।

३. भले लोगों को अपनी शक्ति कभी भी दुष्टों से कम नहीं होने देनी चाहिये।

४. तकनीकी उन्नति के कारण छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर भले विचार के बड़े राज्यों के साथ मैत्री और सहयोग बनाये रखना चाहिये। बड़े राज्यों को भी छोटों की रक्षा और उनकी स्वतंत्रता का विचार रखना चाहिये। अन्यथा वे दुष्टों की शक्ति में वृद्धि का कारण हो जावेंगे।

५. सुख और शान्ति का मार्ग जहाँ दया, धर्म के आधार पर बनता है, वहाँ सर्वोच्च शक्तिशाली शस्त्रास्त्रों की सहायता से भी बनता है

६. निश:स्त्रीकरण से कभी शान्ति स्थापित नहीं हुई। शान्ति स्थापित करने के लिए धर्म-व्यवस्था की स्थापना आवश्यक होती है। और धर्म का आधार है, जैसा कोई अपने साथ व्यवहार चाहता है, वैसा ही व्यवहार वह दूसरों के साथ करे। यदि दूसरा इस धर्म के लक्षण पर आचरण न करे तो उसको दुष्ट मान उस पर विजय और पूर्ण विजय प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री तेजपाल सिंह धामा की रचनाएं

हमारी विरासत अर्थात दिव्य भारत का गौरवशाली इतिहास
मनुर्भव अर्थात् विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा
अजेय अग्नि अर्थात महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा
अग्नि की लपटें अर्थात महारानी पदमिनी की वलीदान गाथा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
अखण्ड आर्यवर्त अर्थात **चन्द्रगुप्त चाणक्य** कथा
पंक से पंकज अर्थात **महर्षि वाल्मिकी** कथामृत
नल नील अभियान "श्री राम सेतु निर्माण"
(सचित्र उपन्यास श्री वी सुन्दरम द्वारा नैट पर दिये प्रमाणो पर आधारित कथा)
गौ का गोरव गाय का विश्वकोष

वीर सावरकर साहित्य

हिन्दुत्व के पंच प्राण
हिन्दुत्व
मोपला मोपला विद्रोह कथा
गोमांतक पुर्तगालीयों द्वारा गोमांतक (गोवा) भूमि पर जघन्य अत्याचार की कथा
प्रतिशोध मरहटों द्वारा पानीपत पराजय के प्रतिशोध पर आधारित
अमर सेनानी सावरकर शिवकुमार गोयल
महामना सावरकर हरि वावू देसाई
लोकोत्तर द्रष्टा सावरकर हरि वावू देसाई

हिन्दी साहित्य सदन

2 वी डी चैम्वर्स, 10/54 डी वी गुप्ता रोड, करोल वाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों पर रचनाएं

श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
हमारी सांस्कृतिक धरोहर
वेद प्रवेशिका (सम्पूर्ण)
ईश केन् कठ उपनिषद्
तैत्तिरीय उपनिषद्
प्रश्न ऐत्तरेय उपनिषद्
मुण्डक माण्डूक्य उपनिषद्
वेद मन्त्रों के देवता
वेद और वैदिक काल
वेदों में सोम
वेदों में इन्द्र
विश्वेदेवा
सायंस और वेद
अद्वैत मीमांसा
विज्ञान और विज्ञान
सृष्टि रचना
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
ब्रह्मसूत्र -1 (वेदान्त दर्शन)
ब्रह्मसूत्र -2 (वेदान्त दर्शन)

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स,10/54 डी बी गुप्ता रोड,करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail:indiabooks@rediffmail.com Tel. 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक, प्रकाशन

महर्षि दयानन्द	गुरुदत्त
श्री कृष्ण	गुरुदत्त
जगत की रचना	गुरुदत्त
महाभारत	गुरुदत्त
हिटलर की कहानी	गुरुदत्त
श्री राम	गुरुदत्त
धर्मवीर हकीकत राय	गुरुदत्त
वीर पूजा (चन्द्रशेखर आज़ाद के जीवन पर)	गुरुदत्त
डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी अन्तिम यात्रा	गुरुदत्त
डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी जीवन यात्रा	शिवकुमार गोयल
स्वामी विवेकानन्द	शिवकुमार गोयल
अमर सेनानी सावरकर	शिवकुमार गोयल
क्रान्तिकारी आन्दोलन (सशस्त्र क्रांति का इतिहास)	शिवकुमार गोयल
धरती है बलिदान की	शान्ता कुमार
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता	तेजपाल सिंह धामा
चन्द्रगुप्त चाणक्य कथा- अखण्ड आर्यवर्त	तेजपाल सिंह धामा
महर्षि वाल्मिकी कथामृत- पंक से पंकज	तेजपाल सिंह धामा
जीवन संघर्ष (दो क्रान्तिकारियों की गौरव गाथा)	गुणमाला सोमानी
देवता स्वरूप भाई परमानन्द	श्री हरिबंश
आदर्श जासूस	वरदा चारी पंडित

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05

E-mail :hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास पर खोजपूर्ण रचनाएं

गुरुदत्त

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास
इतिहास में भारतीय परम्पराएं

पुरुषोत्तम नागेश ओक

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी, रंगीन चित्रों सहित'
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय
ताजमहल मन्दिर भवन है
ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग (2 भाग)
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है
लखनऊ के इमामवाड़े हिन्दू भवन हैं
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (4 भाग)
कौन कहता है अकबर महान था ?
हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है
आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम व सूर्य नमस्कार)
ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष

नरेन्द्र पिपलानी

इतिहास की मृत्यु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (बहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना बदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
सम्भवामि युगे युगे (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण
हमारी विरासत - अर्थात दिव्य भारत का गौरवशाली इतिहास
मनुर्भव - अर्थात् विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा
अजेय अग्नि - अर्थात महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा
अग्नि की लपटें - अर्थात महारानी पदमिनी की बलीदान गाथा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
अखण्ड आर्यवर्त - अर्थात चन्द्रगुप्त चाणक्य कथा
पंक से पंकज - अर्थात महर्षि वाल्मिकी कथामृत
नल नील अभियान "श्री राम सेतु निर्माण"
(सचित्र उपन्यास श्री वी सुन्दरम द्वारा नैट पर दिये प्रमाणो पर आधारित कथा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरों के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक, प्रकाशन

मदनलाल ढींगरा और ऊधमसिंह-लंदन में गोली	बनारसीसिंह
क्रान्तिकारी भगत सिंह	सुरेश
झांसी की रानी	परमेश्वर प्रसाद सिंह
महाराणा प्रताप	परमेश्वर प्रसाद सिंह
बीर बन्दा बैरागी	नवीन जैन
क्रान्तिकारी आज़ाद	शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी सुभाष	शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी देशभक्त सिख	भरतराम भट्ट
क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल	डा० ईश्वर प्रसाद वर्मा
शक्तिपुत्र शिवाजी	सीताराम गोयल
हरि सिंह नलवा	अशोक कौशिक
बोध कथाएँ	अशोक कौशिक
धार्मिक कथाएँ	अशोक कौशिक
शिक्षाप्रद कथाएँ	अशोक कौशिक
प्रेरणादायक कहानियाँ	रवि शेखर श्रीवास्तव
पौराणिक कथाएँ	योगेन्द्र दत्त
देवयानी तथा अन्य कथाएँ	योगेन्द्र दत्त
सदाचार की कथाएँ	योगेन्द्र दत्त
मानवता की कथाएँ	योगेन्द्र दत्त
अनमोल कहानियाँ	पूनम त्यागी
पांडवप्रिया पांचाली	सचदेव

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05

E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजा अनंगपाल ने ज्योतिषराज के बहकाए में आकर अपने पुत्र घोरी को देश, धर्म व जाति से बहिष्कृत किया और वही घोरी बाद में शाहबुद्दीन गौरी बनकर आया, जिसने भारत की सभ्यता व संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने में कोई कसर बाकी न छोड़ी। भारत के कई प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में बहिष्कृत घोरी की कथा मिलती है, लेकिन खेद है कि इतिहासकारों ने कभी इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट नहीं किया?

'क्षमा वीरो का आभूषण होता है—परन्तु अग्नि, साँप व शत्रु को शेष छोड़ देने पर वे बदला लेने से नहीं चूकते।'

'यह कथन सिद्ध होता है'

पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता

पुस्तक में।

लेखक : तेजपाल सिंह धामा मूल्य : 60.00

Central Library
168024
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
168024
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143 168024

वर्ग संख्या.....GUR-D आगत संख्या..................

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे द्वारा प्रकाशित अन्य जीवनियाँ

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 फोन: 23553624, 23551344
ई-मेल : hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

089
GU
16